

# सुबह

subhasaverenews@gmail.com  
facebook.com/subhasaverenews  
www.subhasavere.news  
twitter.com/subhasaverenews

## सुप्रभात

आज से पहले बीते  
जितने भी कल थे  
वे सारे मेरा बचपन है

सारे फैसले जो मैंने  
पिछले दिनों लिए  
सारे रिश्ते जो मैंने  
पिछले दिनों निभाए  
सारी मशकत,  
वो सारी क्रियाएं जो  
कल मेरे द्वार की गईं  
वे सारी  
मेरे बचपन की क्रियाएं हैं

मैं बचपन को किसी अवधि में  
समा नहीं पाती

मैं आज क्या हूँ  
मैं नहीं जानती  
मगर मैं कल एक बच्ची ही थी

अपने जीवन के  
अंतिम दिन का  
गुजरा कल भी,  
मेरा बचपन ही होगा  
पिछले दिनों में  
मैं कमतर ज्ञानी  
कमतर समझदार  
ज्यादा मासूम रही  
और कभी-कभी  
ज्यादा बचकानी भी

हो सकता है  
भविष्य में  
मेरे सर की चांदी देख कर  
या गाल के दर्रे देख कर  
आप मुझ पर हंसे  
मगर मैं तब भी  
अपने अभी-अभी  
गुजरे कल को  
बचपन ही कहूंगी।

- वैशाली थापा

## विरासत : दतिया पैलेस



फोटो : राजेंद्र जांगले

## हालात नहीं बदले तो गरीबी के दलदल में फंसेंगे

● मोदी बोले- ये दुनिया के लिए आपदाओं का दशक

कहा- पहले कोरोना, फिर युद्ध और अब ऊर्जा संकट पैदा कर रहा मुश्किल



द हेग (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नीदरलैंड दौरे पर हैं। उन्होंने ने द हेग में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए दुनिया के मौजूदा हालात पर चिंता जताई। मोदी ने कहा कि आज मानवता के सामने अनेक बड़ी चुनौतियां हैं। पहले कोरोना, फिर युद्ध और अब ऊर्जा संकट से जूझ रही है। ये दशक दुनिया के लिए आपदाओं का

दशक बन गया है। अगर हालात नहीं बदले तो बीते अनेक दशकों के काम पर पानी फिर जाएगा। दुनिया की बहुत बड़ी आबादी गरीबी के दलदल में फंस जाएगी। भारत एआई और सेमीकंडक्टर सेक्टर में तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश में 12 सेमीकंडक्टर प्लांट्स पर काम चल रहा है, जिनमें से 2 में प्रोडक्शन शुरू हो चुका है। 16 मई 2014 को दशकों बाद भारत में पूर्ण बहुमत वाली स्थिर सरकार बनी थी। उन्होंने कहा कि करोड़ों भारतीयों का भरोसा उन्हें न रुकने देता है और न थकने देता है।

● 2025 में करीब 44 करोड़ हजार नए स्टार्टअप स्टार्ट हुए हैं- मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि 2025 में भारत में करीब 44 करोड़ हजार नए स्टार्टअप स्टार्ट हुए हैं। पिछले साल भारत में 1.25 लाख से ज्यादा पेटेंट फाइल हुए। भारत चिप मेंकिंग में सेमीकंडक्टर में भी बड़े कदम उठा रहा है। सेमीकंडक्टर प्लांट पर काम चल रहा है। इनमें से 2 में प्रोडक्शन शुरू हो चुका है। अब चिप भी डिजाइन इन इंडिया, मेड इन इंडिया होगा। भारत की ये जर्नी हमारे लोकतंत्र को मजबूत बना रही है। जब लोगों के सपने सच होते हैं तो लोकतंत्र पर उनका भरोसा बढ़ता है।

## नीट पेपर लीक केस: 9वीं गिरफ्तारी, पुणे की टीचर गिरफ्तार

एनटीए ने एक्सपर्ट तैनात किया था, छात्रों को बॉटनी-जूलॉजी के कई सवाल बताए



नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले में पुणे से एक और टीचर को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सीनियर बॉटनी टीचर मनिषा गुरुनाथ मांधरे के रूप में की गई है। आरोप है कि उसने परीक्षा से पहले छात्रों को बॉटनी और जूलॉजी के कई सवाल बताए थे। छात्रों को बताए गए अधिकांश सवाल 3 मई 2026 को आयोजित नीट परीक्षा के असली प्रश्नपत्र में थे। सीबीआई के मुताबिक मनिषा गुरुनाथ मांधरे को एनटीए ने नीट परीक्षा में एक्सपर्ट के तौर पर नियुक्त किया था। उसके पास बॉटनी और जूलॉजी के प्रश्नपत्रों तक पूरी पहुंच थी। जांच एजेंसी के अनुसार अप्रैल 2026 में आरोपी टीचर ने पुणे की ही रहने वाली मनिषा वाघमारे के जरिए नीट अभ्यर्थियों को जुटाया।

## हनुमान-चालीसा का पाठ मां वाग्देवी की हुई पूजा

● हाईकोर्ट के फैसले के बाद भोजशाला में जुटे श्रद्धालु

श्रद्धालु बोले- सालों बाद बिना रोक-टोक दर्शन हो रहे



धार (नप्र)। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने धार स्थित विवादित भोजशाला-कमाल मौला परिसर को राजा भोज के समय का वाग्देवी (देवी सरस्वती) का मंदिर माना है। कोर्ट ने हिंदू पक्ष को यहां पूजा का अधिकार दे दिया है। फैसले के बाद शनिवार सुबह

श्रद्धालुओं और अलग-अलग समितियों के पदाधिकारियों ने शांतिपूर्ण माहौल में भोजशाला पहुंचकर दर्शन और पूजा-अर्चना की। लोगों ने हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने बताया कि हाईकोर्ट ने 7 अप्रैल 2003 के आदेश को आंशिक रूप से निरस्त कर दिया है।

## सुप्रीम कोर्ट में 2 कैबिनेट याचिकाएं दायर

मुस्लिम पक्ष के सुप्रीम कोर्ट जाने की संभावना को देखते हुए हिंदू पक्ष ने सर्वोच्च न्यायालय में 2 कैबिनेट याचिकाएं दायर की हैं। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने बताया कि हाईकोर्ट ने लंदन के एक संग्रहालय में रखी वाग्देवी की मूल मूर्ति वापस लाने की मांग पर भी विचार किया है। शनिवार को धार पुलिस और रैपिड ऐक्शन फोर्स द्वारा शहर के विभिन्न क्षेत्रों में फ्लैग मार्च किया गया। मार्च प्रमुख मार्गों से होकर गुजरा।

## मप्र हाईकोर्ट का नया पोर्टल लोकार्पित, एम्पावरिंग जस्टिस वाया-यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफॉर्म इटीगेशन कार्यक्रम का किया शुभारंभ न्यायपालिका को अस्पतालों की तरह 24X7 कार्य करना होगा: न्यायाधीश श्री सूर्यकांत

न्याय व्यवस्था के डिजिटली सशक्त होने से आम नागरिकों को मिलेगा त्वरित न्याय : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने कहा है कि अमरकंटक से निकलने वाली मां नर्मदा, छोटी-छोटी नदियों के मिलने से विशाल स्वरूप प्राप्त करती है। इसी प्रकार नई तकनीक की धाराओं के माध्यम से कोर्ट, पुलिस, प्रिजन, फॉरेंसिक और मेडिको लीगल की शाखाएं यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफॉर्म में एकाकार होते हुए न्याय पाने में आमजन के लिए सहायक सिद्ध होंगी। आम नागरिक को त्वरित रूप से न्याय देने के लिये न्यायपालिका को अस्पतालों की तरह 24x7 कार्य करना होगा। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा नागरिकों के लिए डिजिटल सेवाओं का विकास कर न्याय प्रक्रिया को तेज और सरल बनाना सराहनीय और अनुकरणीय है। उच्च न्यायालय के डिजिटल



प्लेटफॉर्म के माध्यम से समय पर बंदियों को मुक्त करने, अर्जेंट हियरिंग, कोर्ट ऑर्डर के डिजिटलीकरण जैसी अनेक सुविधाएं मिलेंगी। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इस पहल

की सराहना करते हुए कहा कि यह व्यवस्था देश के सभी न्यायालयों में लागू की जाए। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत जबलपुर में आयोजित फ्रेगमेंटेशन ऑफ फ्यूजन-एम्पावरिंग जस्टिस वाया-यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफॉर्म इटीगेशन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री संजीव सचदेवा के साथ दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा मुख्य सचिव श्री अनुपम जैन कानूनविद एवं न्यायविद उपस्थित थे।

## मध्यप्रदेश पुलिस के सहयोग से वॉर्ड स्तर पर स्थापित संकेत समाधान मध्यस्थता केंद्रों का हुआ शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में वंदे मातरम और जन गण मन के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। पुष्पगुच्छ और प्रतीक चिह्न भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर हाईकोर्ट के डिजिटल प्लेटफॉर्म की लॉन्चिंग की गई। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने लाइव वीडियो स्ट्रीमिंग के लिए अपना नया एड्रेसर (कोर्टरूम लाइव ऑडियो-विजुअल स्ट्रीमिंग सिस्टम) लॉन्च किया। यह एक ओटीटी स्ट्राइल में तैयार किया गया डिजिटल सिस्टम है, जिससे थर्ड पार्टी सिस्टम पर निर्भरता खत्म होगी और लाइव स्ट्रीमिंग का पूरा कंट्रोल हाईकोर्ट अथॉरिटी के पास होगा। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट का नया पोर्टल भी लॉन्च किया गया। यहां जज, वकील और फरियादियों के लिए कोर्ट के ऑर्डर, बेल एपिलिकेशन सहित अन्य जरूरी दस्तावेज आसानी से उपलब्ध होंगे। यह फ्यूचर रेडी ज्यूडिशियल सिस्टम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने डिजिटल डेटा मैनेजमेंट सिस्टम 'प्रथम' भी लॉन्च किया है। यह सिस्टम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेस है। यह पारदर्शिता और प्रक्रियाओं को सरल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। इस अवसर पर हाईकोर्ट की डिजिटल क्रांति के अंतर्गत कोपीइंग ऑटोमेशन एंड ज्यूडिशियल इन्फॉर्मेशन डिसएमीनेशन सिस्टम की शुरुआत भी की गई। इससे फरियादियों, वकीलों और जजों को आसानी से ऑर्डर्स की प्रमाणित प्रतियां मिल सकेंगी। इसके साथ ही प्रिजन रिलीज के लिए ऑनलाइन क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम की शुरुआत की गई।



# हो जाइए तैयार! भीषण गर्मी-सूखा पड़ने की आशंका

● सुपर अल नीनो मई-जुलाई में ऐक्टिव होने, सर्दी तक रहने की संभावना



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में इस साल सामान्य से कम बारिश के अनुमान के बीच सुपर अल-नीनो भी एक्टिव हो सकता है। अमेरिकी मौसम एजेंसी 'नेशनल ओशनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन' (नोआ) के अनुसार यह मई-जुलाई के दौरान ही दस्तक दे सकता है।

नोआ ने बताया कि प्रशांत महासागर का तापमान इस बार मई में सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। यह गर्मी की स्थिति इस बार पूरे मानसून सीजन के दौरान बनी रह सकती है।

● अलनीनो ने बढ़ाई भारतीय मौसम विभाग की चिंता - भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने केरल में दक्षिण-पश्चिम मानसून के 26 मई, 2026 के आसपास जल्दी आगमन का आधिकारिक पूर्वानुमान लगाया है। यह सामान्य आगमन तिथि 1 जून से पहले है और 2025 सहित हाल के समय में मानसून के जल्दी आगमन की प्रवृत्ति को जारी रखता है। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन के नवीनतम ईएनएसओ पूर्वानुमान के अनुसार, अलनीनो के जल्द ही विकसित होने और 2026-27 की उत्तरी गोलार्ध की सर्दियों तक जारी रहने की संभावना है। एक मौसम एक्सपर्ट और क्लाइमेट इमरजेंसी इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर पीटर डी कार्टर ने कहा है कि ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से धरती का तापमान 2024 के रिकॉर्ड को छूने के बेहद करीब है।



● अलनीनो के बारे में नए पूर्वानुमान ने डराया - 14 मई को प्रकाशित एक नए पूर्वानुमान में, एजेंसी का अनुमान है कि आगामी अलनीनो के अक्टूबर से शुरू होने पर मजबूत या बहुत मजबूत श्रेणी में आने की 65 फीसदी संभावना है, जो इसे रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे मजबूत अलनीनो में से एक बना सकता है। अक्टूबर से फरवरी की अवधि के लिए अत्यंत शक्तिशाली अलनीनो यानी समुद्र की सतह के तापमान में 3.6 डिग्री फारेनहाइट (2 डिग्री सेल्सियस) की बढ़ोतरी, जिसे अनौपचारिक रूप से सुपर अलनीनो कहा जाता है। कुछ एक्सपर्ट तो इसे राक्षस तक कहते हैं। अब इस बात की भी 82 फीसदी संभावना है कि अलनीनो अब से जुलाई के बीच आ जाएगा और फरवरी 2027 तक जारी रहेगा।

## सुपर अलनीनो पूरी दुनिया में मचाएगा तबाही

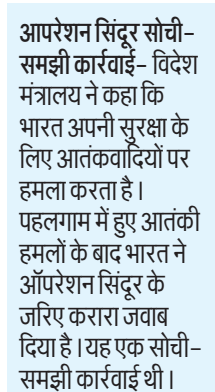
अलनीनो की घटनाएं हर दो से सात वर्षों में होती हैं, जब उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में हवा और समुद्री धाराओं के पैटर्न में बदलाव के कारण समुद्र की सतह का तापमान ऐतिहासिक औसत से 0.9 फारेनहाइट (0.5 डिग्री सेल्सियस) अधिक हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दुनिया तेजी से तटस्थ अवस्था से बाहर निकल रही है। दुनिया का सबसे हालिया अलनीनो मई 2023 से मार्च 2024 तक चला और 2024 को अब तक का सबसे गर्म वर्ष बनाने के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार था। क्लाइमेट ब्रीफ के 21 अप्रैल को प्रकाशित जलवायु आकलन के अनुसार, यदि आगामी अलनीनो शक्तिशाली या अत्यंत शक्तिशाली होता है, तो 2027 पिछले रिकॉर्ड को पार कर सकता है।

## संक्षिप्त समाचार

### भूगोल और इतिहास का हिस्सा बने रहना चाहता है कि नहीं

#### ● पाकिस्तान को इंडियन आर्मी चीफ जनरल द्विवेदी ने दे डाली चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना के प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने शनिवार को कहा कि अगर पाकिस्तान लगातार आतंकवादियों को पनाह देता रहा और भारत के खिलाफ आतंकवाद जारी रखा, तो उन्हें खुद यह तय करना होगा कि वे आने वाले समय में भूगोल का हिस्सा बने रहना चाहते हैं या इतिहास का। दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में सेना संवाद कार्यक्रम में फिर से ऑपरेशन सिंदूर जैसी परिस्थितियां बनने के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने यह बयान दिया। उन्होंने आगे कहा कि पाकिस्तान को भारत विरोधी आतंकवादियों को पनाह देना बंद करना होगा। इससे पहले 12 मई को विदेश मंत्रालय ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन के पाकिस्तान को समर्थन देने पर कहा कि आतंकवाद की रक्षा करने वाले देशों को दुनिया देख रही है कि वे खुद



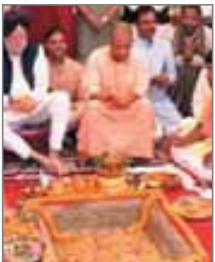
आपरेशन सिंदूर सोची-समझी कार्रवाई - विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए आतंकवादियों पर हमला करेगा।

को किसके साथ जोड़ रहे हैं। उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि ऐसे काम से उनकी प्रतिष्ठा पर क्या प्रभाव पड़ता है। मंगलवार को विदेश मंत्रालय की प्रेस ब्रीफिंग के दौरान उन रिपोर्ट्स का जिक्र हुआ, जिनमें चीन का नाम है।

### केंद्रीय मंत्री ने योगी की तारीफ की, कहा- बहुत सख्त हैं

#### ● सीएम बोले-जाति में बांटने वाले आपके हितैषी नहीं, गोरखपुर स्टेडियम का शिलान्यास किया

गोरखपुर (एजेंसी)। सीएम योगी और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने शनिवार को गोरखपुर में इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास किया। योगी ने कहा - जो लोग जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर बांटते हैं, वे आपके हितैषी नहीं हो सकते। जब भी इनके



500 खिलाड़ियों की नई भर्ती फिर से निकाली है- सीएम योगी ने कहा- अब तक हम लोग 534 से अधिक नौजवानों को नौकरी दे चुके हैं। सीधी भर्ती में ललित उपाध्याय, दीप्ति शर्मा, पारुल चौधरी, अर्जुन देशवाल, प्रवीण कुमार, राजकुमार पाल को सीधे डिप्टी एसपी का पद दिया है।

(सपा) पास सता आई, उसका इस्तेमाल अपने परिवार के लिए किया। भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी की गई। योगी ने कहा - 500 खिलाड़ियों की नई भर्ती फिर से निकाली गई है। जिन्होंने इंटरनेशनल लेवल पर मेडल जीते हैं, उन्हें सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्त पत्र मिलेगा। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सीएम योगी की तारीफ की। उन्होंने कहा - आमतौर पर योगीजी की छवि एक सख्त और दृढ़ प्रशासक के रूप में है। लेकिन, उनके पास किसी भी विषय को गहराई तक समझने की अद्भुत क्षमता है। वे हर योजना की बारीकियों को समझने का काम करते हैं। केंद्रीय मंत्री ने गुरु गोरखनाथ के दर्शन-पूजन भी किए।

शिलान्यास कार्यक्रम में गोरखपुर सांसद रवि किशन कार पुलिंग करके पहुंचे। उनके साथ केंद्रीय मंत्री कमलेश पासवान और कुशीनगर सांसद विजय दुबे भी मौजूद रहे।

# देवास पटाखा फैक्ट्री हादसे में प्रशासन का बड़ा एक्शन

## एसडीएम और नायब तहसीलदार सस्पेंड, निरीक्षण में की थी लापरवाही

देवास (नप्र)। मध्य प्रदेश के देवास जिले के टोंककला स्थित पटाखा फैक्ट्री में हुए हादसे में प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की है। टोंकखुर्द एसडीएम संजीव सक्सेना और टप्पा चिडवावद के नायब तहसीलदार रवि शर्मा को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है। शुरुआती जांच में पाया गया था कि दोनों ने काम में लापरवाही की थी जिस कारण से यह हादसा हुआ। संभागायुक्त के निर्देश के बाद यह कार्रवाई की गई है।

काम में लापरवाही बरतने का आरोप-उज्जैन संभायुक्त द्वारा जारी आदेश में कहा गया है- टोंककला तहसील स्थित पटाखा फैक्ट्री में आगजनी की घटना घटित हुई है। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व टोंकखुर्द ने विस्फोटक सामग्री के संबंध में



शासन द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार निरीक्षण में गंभीर लापरवाही बरती। आदेश में कहा गया है संजीव सक्सेना, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनुभाग टोंकखुर्द एवं प्रभारी डेयूटी कलेक्टर द्वारा अपने कर्तव्यों के निर्वहन में गंभीर लापरवाही, उदासीनता

एवं अनियमितता बरती गई, जिसके कारण घटना हुई। उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। निलंबन के दौरान इनका मुख्यालय कार्यालय कलेक्टर जिला देवास होगा। निलंबन अवधि में इन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ते मिलते रहेंगे।

## गुरुरार को हुआ था हादसा

जिला मुख्यालय से करीब 20 किमी दूर टोंककला में यह पटाखा फैक्ट्री है। फैक्ट्री में ब्लास्ट की गूंज आसपास के इलाकों में सुनाई दे रही थी। वहाँ, इस हादसे में वहां काम कर रहे श्रमिकों के चिथड़े उड़ गए हैं। शवों के टुकड़ों सड़कों पर मिले हैं। आसपास के इलाकों में अफरातफरी की स्थिति है। बताया जा रहा है कि 20 से अधिक लोग जखमी हुए थे। इस हादसे में 6 लोगों मजदूरों की मौत हो गई थी।

## मालिक की गिरफ्तारी

कारखाना मालिक को गिरफ्तार कर लिया गया है। घटना की मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश भी दिए गए हैं। गृह विभाग के अपर मुख् सचिव संजय शुक्ला ने बताया कि केंद्र सरकार के पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अपराध विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारी पटाखा कारखाने में हुए धमाके की जांच कर रहे हैं।

# चेहरा हाथों में भरकर चूमा, बाल सहलाए और खूब दुलारा खुद कागज लेकर पहुंचे कलेक्टर तो बुजुर्गों ने लुटाया प्यार, वर्षों बाद मिली खुशी

दमोह (नप्र)। प्यार-स्नेह और अपनेपन में आईएसएस जैसा ओहदा भी इंसान भूल जाता है! एमपी के दमोह में कुछ ऐसा नजारा देखने को मिला, जिसने सभी को भावुक कर दिया। यहां कलेक्टर प्रताप नारायण सिंह को बुजुर्ग महिलाओं ने बच्चों जैसे बाजू में बैठकर दुलारा किया। कोई उनके चेहरे को हाथ में लेकर दुलारती नजर आई तो कोई उनके सिर पर बार-बार हाथ फेरकर आशीर्वाद तो कोई गले लगा रही थी।

अपने सख्त प्रशासनिक कार्यप्रणाली के लिए पहचाने जाने वाले दमोह कलेक्टर प्रताप नारायण सिंह, जब वृद्धाश्रम पहुंचे तो यहां अलग ही अंदाज और नजारा देखने को मिला। कलेक्टर ने यहां बुजुर्ग महिलाओं को उनकी सालों से रुकी पेंशन स्वीकृत होने के



कागज सौंपे तो महिलाएं खुशी से भावुक हो उठीं। उसके बाद यहां जो आत्मीयता भरा भावुक दृश्य नजर आया, उसकी किसी को कल्पना भी नहीं थी।

मां के जैसा आईएसएस को दिया दुलारा- बुजुर्ग महिलाओं ने कलेक्टर को अपने पास बुलाकर बैठा लिया। कलेक्टर ने बुजुर्गों के पैर छू लिए। इसके बाद एक

महिला उनके चेहरे को बार-बार चूमने लगी और चेहरा हाथों में लेकर बेटे जैसा दुलारा करने लगी। किसी महिला ने उनके सिर पर बार-बार हाथ फेरकर खूब आशीर्वाद दिया तो किसी महिला ने उन्हें गले लगा लिया। यहां अफसर और आम आदमी के बजाय मां बेटे जैसा अपनापन नजर आया।

बुजुर्ग महिलाओं ने पेंशन बंद होने की समस्या बताई थी- दरअसल पिछले दिनों कलेक्टर प्रताप नारायण यादव वृद्धाश्रम पहुंचे थे। उस दौरान उन्हें बताया गया था कि उनकी पेंशन काफी समय से बंद है। इसको लेकर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को यहां भेजकर सबकी दस्तावेजी कार्रवाई कर ईकेवॉयसी पूरी कराई और सभी की वृद्धावस्था पेंशन चालू कराई थी।

## ● एमएलसी उपचुनाव की हार एनडीए के लिए झटका

# बिहार विधान परिषद उप चुनाव में आरजेडी की बल्ले-बल्ले

पटना (एजेंसी)। बिहार विधान परिषद के उप चुनाव में जदयू की हार, एनडीए के लिए झटका है। उसने अपनी जीती हुई सीट राजद के हाथों गंवा दी। लेकिन इस नतीजे को भविष्य के लिए जनमत का संकेत नहीं माना जा सकता।



भोजपुर-बक्सर स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र में कुल 6 हजार 86 मतदाता थे। इस चुनाव में केवल स्थानीय निकाय के प्रतिनिधियों को ही वोट डालना था। जैसे, मुखिया, सरपंच, वार्ड पार्षद, पंचायत समिति सदस्य, जिला परिषद सदस्य आदि।

जब कि दूसरी तरफ किसी विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं के कुल संख्या दो लाख- तीन लाख से अधिक होती है। अब जैसे तेजस्वी यादव के चुनाव क्षेत्र का ही उदाहरण ले लिया जाए। राधेपुर में कुल वोटों की संख्या 3 लाख 44 हजार 369 है। कहाँ छह हजार मतदाता और कहाँ तीन लाख से अधिक मतदाता।

## ● पार्टी को फिर खड़ा करने की अपील, कहा-जरूरत पड़ी तो खुद दफतर पेंट करूंगी

# जो टीएमसी छोड़कर जाना चाहता है जाए: ममता



कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कोलकाता में पार्टी कार्यकर्ताओं से टीएमसी के संगठन को नए सिरे से खड़ा करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि हम पार्टी दफतरों को दोबारा खोलेंगे, उन्हें रंगे और मजबूती से काम पर लौटेंगे। जरूरत पड़ी तो मैं खुद भी दफतरों को

पेंट करने के लिए तैयार हूँ। इसके बाद उन्होंने कहा कि जो लोग दूसरी पार्टियों में जाना चाहते हैं, वे पूरी तरह आजाद हैं और वे किसी को भी जबरदस्ती रोक कर रखने में यकीन नहीं रखतीं। बैठक के दौरान ममता के भतीजे और पार्टी महासचिव अभिषेक बनर्जी भी मौजूद थे। बैठक में ममता ने कहा कि चुनाव के नतीजों में भले ही टीएमसी को 80 सीटें मिली हों, लेकिन यह जनादेश की लूट है। इससे उनका हौंसला नहीं टूटेगा। 21 मई को फालता सीट पर होने वाले उपचुनाव के उम्मीदवार भी मौजूद थे। दरअसल, फालता में 29 अप्रैल को वोटिंग हुई थी, लेकिन ईवीएम छेड़खानी के आरोपों के बाद चुनाव आयोग ने वहां दोबारा वोटिंग कराने का फैसला किया।

## ममता ने इस्तीफा नहीं दिया, चुनावी हिंसा पर कोर्ट पहुंची

ममता ने 4 मई को कोलकाता में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा था, मैं सीएम पद से इस्तीफा नहीं दूंगी। हम जनादेश से नहीं, साजिश से हारे हैं। इसलिए इस्तीफा देने राजभवन नहीं जाऊंगी। चुनाव आयोग असली विलेन है। उसने भाजपा के साथ मिलकर 100 सीटें लूटीं। अब मेरे पास कोई कुर्सी नहीं है, मैं आजाद पछी हूँ। कहीं से भी चुनाव लड़ सकती हूँ, सड़कों पर रहूंगी। ममता जज के सामने पेश हुईं।

# अमेरिका शुरू करेगा 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0'

## ● ईरान पर भीषण हमले का प्लान तैयार, चीन से लौटे ट्रंप पर नजर

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी सेना कथित तौर पर एक बार फिर ईरान पर हमलों की योजना बना रही है। ईरान के साथ शांति वार्ता के किसी नतीजे पर ना पहुंचने के बाद अमेरिका को लग रहा है कि सैन्य हमले ही तेहरान पर दबाव बना सकते हैं।

डोनाल्ड ट्रंप के शुक्रवार को खत्म हुए चीन दौरे के बाद ईरान पर हमले किए जा सकते हैं। अमेरिका और इजरायल गठबंधन ने 28 फरवरी को ईरान पर हमले किए थे। इसके बाद दोनों पक्षों में भीषण लड़ाई हुई। 8 अप्रैल को अस्थायी सौजफायर के बाद दोनों पक्षों की बातचीत के जरिए समझौते पर पहुंचने की कोशिश अभी तक नाकाम रही है।



इससे फिर लड़ाई शुरू होने की आशंका ने जोर पकड़ा है। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने शुक्रवार को अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अमेरिकी अधिकारियों ने ईरान के खिलाफ सैन्य हमले फिर से शुरू करने के लिए ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0 की योजना तैयार की है। सैन्य समाधान का यह प्लान तब बना है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन का अपना दो दिवसीय दौरा पूरा कर लिया है। द

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि पेंटागन आने वाले दिनों में ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0 की योजना बना रहा है। रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने इस सप्ताह कांग्रेस के समक्ष गवाही देते हुए सांसदों से कहा है कि यदि आवश्यक हुआ तो हमारे पास स्थिति को आगे बढ़ाने यानी हमले तेज करने की योजना मौजूद है। पश्चिम एशिया के दो अधिकारियों ने अखबार को बताया कि अमेरिका और इजरायल के अधिकारी ईरान के खिलाफ हमलों को अगले सप्ताह फिर से शुरू करने की गहन तैयारियों में जुटे हुए हैं।

जमीनी हमले या खर्ग पर कब्जा रिपोर्ट बताती है कि अमेरिका की योजना में तीन विकल्प हैं। इसमें पहला ईरान के सैन्य और बुनियादी ढांचे पर हवाई हमलों का है। दूसरा विकल्प यह है कि ईरान की जमीन पर विशेष अभियान के लिए सेना उतारी जाए ताकि वे जमीन के काफी नीचे गहराई में दबे हुए परमाणु सामग्री के भंडारों को खत्म कर सकें। प्लान का तीसरा विकल्प यह है कि अमेरिकी सेना खर्ग द्वीप पर कब्जा करे। खर्ग ईरानी तेल निर्यात का एक बड़ा केंद्र है। इसमें मुश्किल यह है कि खर्ग पर कब्जा बनाए रखने के लिए काफी ज्यादा सैनिकों की जरूरत पड़ेगी। ईरान को यहां की परिस्थिति से मिलने वाला फायदा अमेरिका की मुश्किल बढ़ाएगा। अखबार ने दावा किया कि अमी के पास प्लान है लेकिन ट्रंप ने अभी तक हमले फिर से शुरू करने का फैसला नहीं किया है। डोनाल्ड ट्रंप लगातार ईरान को धमकी दे रहे हैं।

# प्लास्टिक दाना फैक्ट्री में भीषण आग लगी 10 किमी तक दिखा काले धुएं का गुबार

इंदौर। नावदा पंथ स्थित प्लास्टिक दाना फैक्ट्री में शनिवार सुबह भीषण आग लगने से इलाके में हड़कंप मच गया। धार रोड पर स्थित ड्यू ड्रॉप इरिगेशन फैक्ट्री में सुबह करीब 7 बजे अचानक आग भड़क उठी। फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में रखा प्लास्टिक दाना आग पकड़ते ही धू-धू कर जलने लगा और देखते ही देखते आसमान में काले धुएं का विशाल गुबार छा गया। धुआं करीब 10 किलोमीटर दूर तक दिखाई देता रहा। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की छह गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। चंदन नगर थाना पुलिस ने आसपास का क्षेत्र खाली करवाकर सुरक्षा घेरा बनाया। नगर निगम कमिश्नर शक्ति सिंघल भी मौके पर पहुंचे और राहत कार्य का जायजा लिया। फैक्ट्री के टिन शेड पानी डालने में बाधा बन रहे थे, जिन्हें जेसीबी से हटाया गया। पानी की कमी होने पर आसपास के ट्यूबवेल से भी पानी मंगवाया गया। करीब दो से तीन घंटे की मशकत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

## पानी की कमी बनी चुनौती

आग काफी ज्यादा फैल चुकी थी और आसपास पर्याप्त पानी के स्रोत उपलब्ध नहीं होने से दिक्कत आई। दूसरे इलाकों से पानी के टैंकर बुलाकर दमकल वाहनों को भरा गया। आग की तीव्रता को देखते हुए पोकलेन मशीन और अनिशनमन रोबोट भी मौके पर मंगाए गए। नगर निगम आयुक्त शक्ति सिंघल भी घटनास्थल पर पहुंचे और

## धार रोड के नावदा पंथ में अफरा-तफरी, 6 दमकलों ने 3 घंटे में काबू पाया



हालात का जायजा लिया। दमकल कर्मियों के अनुसार फैक्ट्री के भीतर अभी प्रवेश करने में मुश्किल आई। परिसर में टिन शेड लगा होने से भी आग बुझाने में परेशानी आई। शेड हटाने के बाद अंदर तक पानी डाला गया।

## आसपास खाली कराया

आग की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने आसपास के क्षेत्र को खाली करा लिया गया, ताकि किसी प्रकार की जनहानि न हो। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी लगातार मौके पर मौजूद रहकर स्थिति पर नजर बनाए रखी। प्रारंभिक आशंका है कि फैक्ट्री में रखा अधिकांश सामान जलकर नष्ट हो गया है। राहत की बात यह रही कि अब तक किसी के हाताहत होने की सूचना नहीं मिली है।

## बंद थी मजदूरों की आवाजाही

फैक्ट्री संचालक मोहम्मद जावेद कुरेशी ने बताया कि अमावस्या होने के कारण शनिवार को मजदूर काम पर नहीं आए थे। फैक्ट्री में सामान्य दिनों में करीब 30 से 35 मजदूर काम करते हैं और दिन-रात दोनों पालियों में उत्पादन चलता है। उन्होंने बताया कि पास में ही दिलीप नामक व्यक्ति की हर्बल उत्पाद बनाने की इकाई भी है और चिंता इस बात की है कि आग वहां तक न पहुंच जाए।

## चिंगारी से भड़की आग

मोहम्मद जावेद के अनुसार फैक्ट्री परिसर में लगे विद्युत केबल में अचानक शॉर्ट सर्किट हुआ, जिसके बाद आग भड़क उठी और देखते ही देखते पूरी फैक्ट्री इसकी चपेट में आ गई। प्लास्टिक दाना ज्वलनशील होने के कारण लपटें तेजी से फैलती चली गईं। श्री राम तरावली गांव के सरपंच जितेंद्र चौधरी ने बताया कि उन्हें सुबह करीब दस बजे आग लगने की सूचना मिली थी। इसके बाद गांव के लोग भी मदद के लिए पहुंच गए। ग्रामीणों ने अपने ट्यूबवेल से पानी उपलब्ध कराकर आग बुझाने में सहयोग किया।

# भोजशाला पर हाई कोर्ट के फैसले से मुस्लिम पक्ष की नाराजगी सामने आई

कमाल मौला कमेटी बोली 'सुप्रीम कोर्ट में कानूनी लड़ाई लड़ेंगे'

इंदौर। धार स्थित भोजशाला मंदिर और कमाल मौला मस्जिद विवाद में उच्च न्यायालय के फैसले के बाद मुस्लिम पक्ष ने नाराजगी जताई। अदालत ने शुरुवार को अपने निर्णय में विवादित स्थल को मंदिर मानते हुए हिंदू पक्ष को पूजा का अधिकार दिया। फैसले के बाद कमाल मौला मस्जिद नमाज इंतजामिया कमेटी के अध्यक्ष जुल्फिकार पठान ने कहा कि वे इस निर्णय से संतुष्ट नहीं हैं और अब सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएंगे। जुल्फिकार पठान ने कहा कि अभी पूरे फैसले का विस्तार से अध्ययन किया जा रहा है। उनके मुताबिक आदेश में कई ऐसी बातें हैं, जिन पर कानूनी आपत्ति नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि उच्च न्यायालय के फैसले का सम्मान किया जाता है, लेकिन मुस्लिम पक्ष इससे सहमत नहीं है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से प्रस्तुत तथ्यों में कई कमियां और त्रुटियां हैं। पठान ने कहा कि उनके अधिवक्ता पूरे मामले की समीक्षा कर रहे हैं और जल्द ही सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी जाएगी।

**समाज से संयम की अपील-** समाज को संदेश देते हुए जुल्फिकार पठान ने कहा कि मुस्लिम समुदाय धैर्य बनाए रखे और प्रदेश में शांति व्यवस्था कायम रखे। उन्होंने कहा, अल्लाह सबसे बड़ा है, इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है। अभी कानूनी



रास्ते खुले हुए हैं और मुस्लिम समाज पूरी मजबूती के साथ सर्वोच्च न्यायालय में अपनी बात रखेगा।

## 800 वर्षों से नमाज पढ़ी जा रही

हिंदू पक्ष द्वारा फैसले के बाद मनाए गए जश्न पर प्रतिक्रिया देते हुए पठान ने कहा कि यह उनके लिए खुशी का विषय हो सकता है, लेकिन मुस्लिम समाज के लिए नहीं। उन्होंने दावा किया कि पिछले लगभग 800 वर्षों से उस स्थान पर नमाज अदा की जा रही है और मुस्लिम समाज लगातार वहां धार्मिक गतिविधियां करता आया है। उन्होंने कहा कि फैसले से मुस्लिम समुदाय के अधिकारों का हनन हुआ है। पठान के अनुसार, जिस स्थान पर वर्षों से नमाज पढ़ी जा रही थी, उसी जगह को अब पूजा स्थल घोषित किया गया है। उन्होंने दोहराया कि मुस्लिम पक्ष अदालत के आदेश का सम्मान करता है, लेकिन निर्णय से सहमत नहीं है और कानूनी लड़ाई आगे जारी रखेगा।

# शहर में तपिश बरकरार, तापमान घटा, गर्म हवाओं से लोग परेशान

## छहदिन बाद 41 पर दिन का पारा, रात में भी राहत नहीं



पर ही इस दौरान घरों से बाहर निकलें। उनके मुताबिक 16 से 19 मई तक प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में तेज गर्मी का दौर जारी रहेगा और इंदौर संभाग भी इसकी चपेट में रहेगा।

**समय से पहले मानसून-** भीषण गर्मी के बीच मौसम विभाग ने राहत भरी संभावना भी जताई है।

अनुमान है कि इस बार मानसून सामान्य समय से पहले प्रदेश में प्रवेश कर सकता है। संकेत मिल रहे हैं कि मानसून 26 मई तक केरल के आसपास पहुंच जाएगा, जबकि सामान्य रूप से इसकी शुरुआत एक जून तक मानी जाती है। इसी आधार पर माना जा रहा है कि मानसून 12 जून तक मध्यप्रदेश में दस्तक दे सकता है।

## टूट चुके हैं गर्मी के रिकॉर्ड

इंदौर में मई के महीने में तापमान कई बार खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है। मौसम विभाग के अनुसार 31 मई 1994 को शहर में 46.6 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था, जो अब तक का रिकॉर्ड है। हालांकि मई में कई बार मौसम करवट भी लेता है और बादलों के साथ बारिश की स्थिति बन जाती है। पिछले वर्ष मई महीने में करीब तीन इंच वर्षा दर्ज की गई थी। वर्ष 2014 से 2023 के बीच नौ बार मई में बारिश हो चुकी है।

# इनेज खुदाई बनी मुसीबत, चंदन नगर में नलों से आ रहा गंदा पानी

## एक माह से अधूरा पड़ा काम, चंदू वाला रोड गड्ढे में तब्दील

इंदौर। शहर के चंदन नगर क्षेत्र स्थित चंदू वाला रोड पर नगर निगम की लापरवाही से रहवासी भारी परेशानी झेल रहे हैं। इनेज लाइन डालने के लिए करीब एक माह पहले सड़क खोदी गई थी, लेकिन काम अधूरा छोड़ दिए जाने से पूरा मार्ग गड्ढे में तब्दील हो गया है। हालात यह हैं कि इनेज का गंदा पानी और नर्मदा सप्लाई का पानी मिक्स होकर सीधे घरों के नलों तक पहुंच रहा है। स्थानीय लोगों के मुताबिक निगम ने पाइपलाइन डालने के नाम पर सड़क पर बड़ा गड्ढा खोद दिया, लेकिन उसके बाद काम पूरी तरह बंद हो गया। सड़क खराब होने से रोजाना आवागमन प्रभावित हो रहा है। सबसे ज्यादा परेशानी स्कूली बच्चों और बुजुर्गों को उठानी पड़ रही है, जिन्हें जान जोखिम में डालकर रास्ता पार करना पड़ रहा है।

**स्वास्थ्य संकट की आशंका-** गंदे और साफ पानी के मिक्स होकर सप्लाई



## आंदोलन की चेतावनी

निगम की कार्यप्रणाली से नाराज लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द सड़क दुरुस्त नहीं की गई और पाइपलाइन का काम पूरा नहीं हुआ तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। रहवासियों का आरोप है कि निगम विकास कार्यों के नाम पर सड़कें खोदकर छोड़ देता है, जिससे आम जनता को बुनियादी सुविधाओं के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

होने से लोगों में बीमारी फैलने का डर बना हुआ है। रहवासियों का कहना है कि इस मामले की शिकायत कई बार नगर

निगम और सीएम हेल्पलाइन पर की जा चुकी है, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई।

# भीषण गर्मी के बीच प्रशासन सख्त, पटाखा फैक्ट्रियों, गोदामों की जांच

## सुरक्षा में लापरवाही पर 3 इकाइयों पर ताला, लगातार कार्रवाई



दंडाधिकारी रोशन राय ने बताया कि तहसील हातोद के ग्राम खजुरिया स्थित पटाखा फैक्ट्री को तहसीलदार द्वारा निरीक्षण किया गया। जांच में सुरक्षा मानकों का पालन अधूरा पाए जाने पर फैक्ट्री को सील कर दिया गया। इस इकाई का

संचालन विनोद पिता रूपाजी द्वारा किया जा रहा था।

**सांवर, बिचोली क्षेत्र में भी कार्रवाई-** एसडीएम सांवर ने धतुरिया और पंचदेरिया क्षेत्र में संचालित पटाखा संस्थानों का अचानक निरीक्षण

किया। निरीक्षण के दौरान सुरक्षा व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई और जहां जरूरी लगा वहां तत्काल सुधार करवाए गए। संचालकों को सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश भी दिए गए। इसी तरह बिचोली क्षेत्र में भी पटाखा फैक्ट्रियों और गोदामों की जांच की गई। यहां सुरक्षा मानकों में गंभीर कमी पाए जाने पर ग्राम राजधरा स्थित शाना फायर वर्क्स और बाबा फायर वर्क्स को सील कर दिया गया। शाना फायर वर्क्स का संचालन अकरम मंसूरी तथा बाबा फायर वर्क्स का संचालन सलीम मंसूरी कर रहे थे।

## जारी रहेगा अभियान

प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जिले में यह जांच अभियान लगातार जारी रहेगा। अधिकारियों का कहना है कि गर्मी के मौसम में जरा सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है, इसलिए सुरक्षा नियमों का पालन हर हाल में सुनिश्चित कराया जाएगा।

## 1.55 लाख की अवैध मदिरा एवं वाहन जब्त



इंदौर। देपालपुर अंतर्गत उप निरीक्षक श्री भगवानदास अहिरवार एवं उनकी टीम द्वारा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर विशेष चेंकिंग अभियान चलाया गया। से प्राप्त सूचना के आधार पर काली बिल्लोद रोड पर वाहन चेंकिंग के दौरान काले रंग की पल्सर मोटरसाइकिल को रोका गया। वाहन पर सवार निवासी इंदौर संजय पिता अमर सिंह एवं सुनील पिता भवर सिंह द्वारा अवैध मदिरा का परिवहन किया जा रहा था। तलाशी के दौरान एक झोले से 24 नग बोल्ट बीयर केन जब्त की गईं। जब्त मदिरा एवं वाहन का कुल अनुमानित बाजार मूल्य लगभग 1 लाख 55 हजार रुपए आका गया है। उक्त दोनों आरोपियों के विरुद्ध मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)(क) के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। कार्यवाही में आरक्षक राशि सोलत, रविंद्र कुमार बघेल एवं श्री सावन सिसोदिया का सराहनीय योगदान रहा।

## युवक से मारपीट, आरोपियों की तलाश

इंदौर। चंदन नगर इलाके में एक युवक के साथ तीन भाइयों ने मिलकर मारपीट की। बताया जाता है कि आरोपियों ने डीपी से इलाके की बिजली बंद कर दी थी। जब युवक कारण जानने के लिए वहां पहुंचा तो विवाद बढ़ गया और उस पर हमला कर दिया गया। चंदन नगर पुलिस के अनुसार, शाहनवाज खान निवासी केशव नगर की शिकायत पर अनवर पुत्र सलीम, फारूक और सिद्दीकी के खिलाफ मारपीट की एकआइसार्ज दर्ज की गई है। शाहनवाज ने बताया कि गुरुवार रात करीब साढ़े 12 बजे अचानक घर की बिजली वोल्टेज कम होने के बाद बंद हो गई थी। वह जब बाहर निकला तो देखा कि डीपी के पास तीनों भाई खड़े थे। उसने वहां कारण पूछा तो आरोपियों ने उसे वहां से जाने के लिए कह दिया। जब उसने एमपीईबी (बिजली विभाग) को बुलाने की बात कही, तो तीनों ने उस पर हमला कर दिया।

## देपालपुर में दो बहनों की सदियुग मौत

इंदौर। देपालपुर में उल्टी-दस्त की शिकायत के बाद दो बहनों की मौत हो गई। घटना के बाद स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची और सर्वे किया। वार्ड क्रमांक छह स्थित हरिजन मोहल्ले में मुकेश चौहान की दो बेटियों की मौत हुई है। मजदूर परिवार की बच्चियों की दूधित खानपान के कारण तबीयत बिगड़ी थी। परिजन उन्हें इलाज के लिए निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां एक बच्ची की निजी अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई, जबकि दूसरी बच्ची की घर पर मौत हुई। दो बच्चियां 8 वर्षीय खुशबू और 6 वर्षीय आरती हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ माधव हसानी, ब्लाक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ वंदना केसरी और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पीड़ित परिवार के सदस्यों को जांच के लिए शासकीय अस्पताल पहुंचाया। रहवासियों का आरोप है कि वार्ड में मुख्य मार्ग से लगे मकानों के सामने बनी लगभग आठ फीट गहरी कच्ची-पक्की नालियों की बदहाल स्थिति एवं पेयजल नलों के रिसाव के कारण लोग दूषित पानी पीने को मजबूर हैं, जिससे क्षेत्र में लगातार बीमारियां फैल रही हैं। पूरे मोहल्ले में गंदगी पसरी हुई है, नालियां भी खुली पड़ी हैं।

## तीन बालिकाएं अपहृत, उज्जैन में मिली

इंदौर। थाना अन्नपूर्णा पुलिस ने त्वरित एवं संवेदनशील कार्यवाही करते हुए तीन नाबालिग बालिकाओं को 24 घंटे के भीतर उज्जैन से सकुशल दस्तयाब करने में सफलता प्राप्त की है। 114 मई को थाना अन्नपूर्णा क्षेत्र से तीन नाबालिग बालिकाओं के गुम/अपहृत होने की सूचना प्राप्त हुई थी। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में एक विशेष टीम गठित कर तत्काल तलाश प्रारंभ की गई। पुलिस टीम द्वारा लगातार सघन सर्चिंग अभियान चलाते हुए संभावित स्थानों पर तलाश, आसपास के क्षेत्रों में पूछताछ, सीसीटीवी फुटेज का परीक्षण तथा तकनीकी विश्लेषण के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित की गई। मुखबिर तंत्र एवं तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर उज्जैन टीम ने सतत प्रयास करते हुए तीनों बालिकाओं को उज्जैन से मात्र 24 घंटे के भीतर सकुशल दस्तयाब कर लिया। बालिकाओं की काउंसिलिंग कर सुरक्षित उनके परिजनों के सुपुर्द किया गया।

## कहानी

## रमेश कुमार 'रिपु'



कल्याणी जब पहली बार वॉकर पकड़कर अस्पताल के गलियारे में चली थी, तब उसके चेहरे पर दर्द से ज्यादा ज़िद थी। दोनों घुटनों का ऑपरेशन हुए अभी पाँच दिन ही हुए थे। हर कदम पर ऐसा लगता था जैसे किसी ने हड्डियों में कील ठोक दी हो, मगर वह रुकना नहीं चाहती थी। पीछे खड़े महेन्द्र की आँखों में बेचैनी थी।

डॉक्टर हँसते हुए बोले, 'मैडम से ज्यादा डर तो इनके चेहरे पर दिख रहा है।'

कल्याणी मुस्कुराई, 'इन्हें लगता है मैं मर जाऊँगी तो ये अकेले पड़ जाएँगे।'

महेन्द्र ने तुरंत उसकी बाँह थाम ली। 'तुम नहीं रहोगी तो मैं सिर्फ अकेला नहीं पड़ूँगा, खत्म हो जाऊँगा।'

कल्याणी हँसी, मगर भीतर कहीं वह कॉप गई। साठ की उम्र में भी महेन्द्र बेहद सधे हुए आदमी लगते थे। हल्की सफेद दाढ़ी, चुस्त शरीर, हमेशा करीने से प्रेस की हुई शर्ट। कोई भी उन्हें चालीस-पैंतालीस से ज्यादा का नहीं मानता। वहीं कल्याणी के चेहरे पर बीमारी की लंबी कहानी लिखी थी। ब्रेस्ट कैंसर का ऑपरेशन, फिर गॉलब्लैडर की पथरी, अब घुटनों का रिप्लेसमेंट। शरीर धीरे-धीरे उसका साथ छोड़ता जा रहा था। लेकिन महेन्द्र ने कभी उसे यह महसूस नहीं होने दिया कि वह अथुरी है।

शादी के दस साल बाद जब डॉक्टरों ने साफ कह दिया कि अब संतान की उम्मीद लगभग खत्म है, तब भी महेन्द्र ने सिर्फ इतना कहा था, 'हर आदमी बाप बनने के लिए नहीं पैदा होता कुछ लोग सिर्फ पति बनने के लिए भी पैदा होते हैं।'

उस दिन कल्याणी देर तक रोई थी। घर लौटने के बाद स्नेह ने जिस तरह उसकी सेवा शुरू की, उससे कल्याणी का सुना घर जैसे फिर से घर लगने लगा। स्नेह ऊपर वाले दो कमरों में किराए से रहती थी। साथ में उसका पाँच साल का बेटा ईशान रहता था।

उसका पति सोहन मुंबई में इंजीनियर था। साल में एक-दो बार आता। फिर एक दिन पता चला, तलाक हो चुका है। कोर्ट ने बच्चे का खर्च तय कर दिया है। बस

रिश्ता कागज पर खत्म हुआ था, आदतों में नहीं। एक रात छत पर कपड़े उतारते हुए कल्याणी ने उसे चुपचाप रोते देख लिया।

'क्या हुआ?'

स्नेह पहले मुस्कुराई। फिर अचानक आँखें भर आईं। 'कुछ नहीं आंटी, बस कभी-कभी लगता है किसी का इंतजार आदत बन जाए ना तो नींद मर जाती है।'

उस रात पहली बार कल्याणी को लगा, यह लड़की भीतर से बहुत अकेली है। धीरे-धीरे वह किराएदार कम, घर की सदस्य ज्यादा हो गई।

सुबह नाश्ता बनाकर लाती। दोपहर में दवा देती। रात में घुटनों पर सिकाई करती। कई बार महेन्द्र ऑफिस से लौटते तो स्नेह चाय बनाकर उनके सामने रख देती।

'अंकल, आज शुगर कम डाली है।'

'तुम्हें कैसे पता मुझे कितनी शुगर पसंद है?'

'आंटी ने बताया।'

तीनों हँस पड़ते। और यहीं से शायद वह महीन धागा बुना जाना शुरू हुआ जिसे बाद में कल्याणी खुद काट नहीं पाई।

एक दिन स्नेह को तेज दर्द उठा। जाँच हुई। रिपोर्ट में बच्चेदानी में गाँठ निकली। वह डर गई। कल्याणी ने तुरंत कहा, 'घबराओ मत। तुम्हारे अंकल के बहुत डॉक्टर परिचित हैं। सब ठीक हो जाएगा।'

उस दिन पहली बार महेन्द्र उसे डॉक्टर के पास लेकर गए। वापसी में रास्ते भर स्नेह चुप रही। फिर अचानक बोली, 'अगर मुझे कुछ हो गया ना तो ईशान का क्या होगा?'

महेन्द्र ने स्टीयरिंग पर हाथ कस लिया।

'कुछ नहीं होगा तुम्हें।'

'सब यही कहते हैं।'

'मैं कह रहा हूँ।'

उसके स्वर में एक अजीब भरोसा था। घर लौटकर उसी रात स्नेह ने उन्हें मैसेज किया, 'आज अगर आप साथ नहीं होते तो मैं बहुत डर जाती।'

महेन्द्र फोन टेबल पर छोड़कर नहाने चले गए। स्क्रीन चमकी। मैसेज बताने में पड़ लिया। बस वही क्षण था

जब उसके भीतर की औरत पहली बार चुपचाप जागी। कुछ दिनों बाद महेन्द्र एक साड़ी खरीदकर लाए। कल्याणी खुश हो गई।

'अरे वाह! मेरी पसंद याद है अभी तक?'

महेन्द्र सहज स्वर में बोले, 'स्नेह ने पसंद करवाई। 'पता नहीं क्यों, उस एक वाक्य ने भीतर कहीं हल्की-सी चुभन पैदा कर दी। उस रात कल्याणी देर तक आईने के सामने खड़ी रही। लीली पड़ती त्वचा। ऑपरेशन के निशान। झुकी देहा। उसी समय बाहर से स्नेह की खिलखिलाहट सुनाई दी। खुले बाल। जवान चेहरा। जिंदा आँखें।

कल्याणी ने धीरे से अपने प्रतिबिंब से कहा, 'औरत पहले अपने शरीर से हारती है फिर दुनिया से।'

महेन्द्र को अभी भी कुछ समझ नहीं आया था। उन्हें लगता था, कल्याणी बस बीमारी और उम्र की वजह से मरने खड़ी रही है। लेकिन शक बहुत धीरे जन्म लेता है। और एक बार जन्म ले ले तो हर चीज में अपना प्रमाण खोज लेता है।

अब कल्याणी नोटिस करने लगी, महेन्द्र स्नेह के बेटे के लिए खिलौने लाते हैं। स्नेह महेन्द्र की पसंद का दलिया बनाती है। महेन्द्र कहते, 'तुम अकेले डॉक्टर के पास मत जाया करो।'

स्नेह पूछती, 'ऑफिस से लौटने में देर हो जाएगी क्या?'

सामान्य बातें थीं। लेकिन अब सामान्य कुछ नहीं रह गया था। कल्याणी का जन्मदिन आया। घर सजाया गया। केक आया। तस्वीरें खिंचीं। एक फोटो में फोटोग्राफर ने महेन्द्र और स्नेह को साथ खड़ा कर दिया। पीछे हल्की लाइट थी। दोनों सचमुच पति-पत्नी जैसे लग रहे थे। फोटो सोशल मीडिया पर डाली गई। कमेंट आने लगे, 'क्या खूबसूरत कपल है!'

'ऐसा पति मिले तो जिंदगी बन जाए!'

'जोड़ी हो तो ऐसी!'

कल्याणी सब पढ़ती रही। चेहरे पर मुस्कान थी। लेकिन भीतर कोई धीरे-धीरे टूट रहा था। उस रात उसने पहली बार महेन्द्र से पूछा, 'तुम्हें स्नेह अच्छी लगती है?'

महेन्द्र हँस पड़े। 'तुम्हें क्या हो गया है?'

'सोधा जवाब दो।'

'अच्छी लड़की है।'

'बस लड़की?'

महेन्द्र ने पहली बार उसकी आँखों में देखा। वहाँ मजाक नहीं था। उसके बाद घर बदलने लगा। अब कल्याणी छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ने लगी।

'बहुत फिक्क रहती है तुम्हें उसकी।'

'अरे बीमार है।'

'और मैं?'

'तुम्हारे लिए ही तो सब कर रहा हूँ।'

'या मेरे सामने कुछ और पीछे कुछ और?'

महेन्द्र अवाक रह जाते। एक दिन तो उसने साफ कह दिया, 'मैं जानती हूँ तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है।'

'महेन्द्र जैसे सुन्न पड़ गए। 'होश में हो?'

'उस रात लाइट गई थी। दस मिनट अंधेरा था। मैं कमरे में थी। तुम दोनों बाहर थे। मुझे सब समझ आता है।'

असलियत यह थी कि रिपोर्ट देखकर स्नेह डर गई थी और रोने लगी थी। महेन्द्र उसे पानी पिला रहे थे। लेकिन अंधेरा हमेशा सच नहीं दिखाता। कई बार वह डर दिखाता है। धीरे-धीरे कल्याणी के आरोप वही करने लगे जिससे वह डरती थी। अब महेन्द्र सचमुच स्नेह के प्रति सजग रहने लगे। एक दिन कल्याणी ने सबके सामने स्नेह का अपमान कर दिया।

'बहुत सेवा कर ली तुमने इस घर की!'

स्नेह का चेहरा सफेद पड़ गया। वह ऊपर जाकर सामान पैक करने लगी। महेन्द्र पीछे-पीछे पहुँचे।

'ये क्या कर रही हो?'

'कमरा खाली कर दूँगी।'

'कहीं नहीं जाओगी।'

'किस हक से रोक रहे है?'

महेन्द्र चुप रह गए। और उसी चुप्पी में शायद प्रेम पहली बार जन्मा। उसके बाद तीनों साथ रहते हुए भी साथ नहीं रहे। कल्याणी अब भीतर-ही-भीतर बुझने लगी

थी। लेकिन एक सच कोई नहीं जानता था।

उसका कैंसर लौट आया था। रिपोर्ट उसने महीनों पहले देख ली थी। उसने महेन्द्र को नहीं बताया। क्योंकि वह जानती थी, अब उसके बाद महेन्द्र अकेले रह जाएँगे। और शायद इसी डर में उसने एक अजीब खेल खेलना शुरू किया। वह खुद दोनों के बीच शक बोती रही। शायद इसलिए कि उसके जाने के बाद महेन्द्र बिल्कुल खाली न रह जाएँ।

एक सुबह स्नेह चाय लेकर नीचे आई। कमरा खुला था। कल्याणी बिल्कुल शांत लेटी थी। जैसे बहुत दिनों बाद उसे नींद आई हो। तब तक के नीचे एक पत्र रखा था। महेन्द्र काँपते हाथों से पढ़ने लगे, 'मेरी मौत के लिए किसी को दोष मत देना। मैं थक गई थी। बीमारी से नहीं, इस डर से कि मेरे बाद तुम अकेले रह जाओगे।'

उन्की आँखें धुँधली हो गईं। पत्र में आगे लिखा था, 'मैंने ही शक का बीज बोया। पहले मुझे सचमुच डर लगा था कि कहीं स्नेह तुम्हें मुझसे दूर न कर दे। फिर एक दिन समझ गई वह तुम्हें मुझसे दूर नहीं, मेरे बाद अकेलेपन से बचा सकती है।'

स्नेह फूट-फूटकर रोने लगी। पत्र की आखिरी पंक्तियाँ थीं, 'महेन्द्र, मुझे माफ कर देना। और स्नेह, अगर तुम्हारे दिल में उनके लिए जरा-सी भी जगह हो तो उन्हें अकेला मत छोड़ना। मैं हारना नहीं चाहती थी। इसलिए तुम्हें किसी और की बाँहों में धकेल दिया।'

तेरहवीं के बाद स्नेह सामान बाँधने लगी। महेन्द्र ने धीमे स्वर में पूछा, 'तुम भी चली जाओगी?'

स्नेह ने सिर झुका लिया।

'मैं रह गई तो लोग बातें करेंगे।'

बहुत देर तक कमरे में खामोशी रही।

फिर महेन्द्र बोले, 'और अगर वही बात सच हो चुकी हो तो?'

स्नेह रो पड़ी। बालकनी में हवा चल रही थी। दीवार पर टंगी कल्याणी की तस्वीर मुस्कुरा रही थी। घर

में अब भी तीन लोगों की उपस्थिति थी। बस उनमें से एक दिखाई नहीं देती थी।

## राजकुमार कुम्भज की दो कविताएँ

## हर दिन नया सूर्योदय



हर दिन नया सूर्योदय जमाने भर का बोझ है पीठ पर मेरा जरा कुछ भी है नहीं इसमें

कुछ इसका है, कुछ उसका है

कुछ है ज्ञात-ज्ञात भी शायद

कि पता-ठिकाना तक याद नहीं

छले हैं पैरों में वक़्त ने दिए जो

सीमा हथों की संकुचित करता है वही

सोचता हूँ कि लड़ना-झगड़ना

किस किससे और क्यों

जबकि क्रिशतों में, क्रिस्सों में

बँद गई है जिंदगी।

भूल गया हूँ वाकई भूल गया हूँ मैं

कि खुली पीठ हूँ किसकी

किसकी है जिन्मेंदारी मुझ पर

हर दिन नया सितम, हर दिन नया ज़ख्म

हर दिन नये आँसू हैं अगर मेरे लिए

तो है कहीं थोड़ी खुशी भी

जिसे ढूँढ़ता ही रहता हूँ मैं अकसर

अपनी आधी-अथुरी कविताओं में

और यही-यही समझते हुए कि जैसे

हर दिन नया सूर्योदय.

## एक आदमी था, एक दृश्य था.

एक आदमी था, एक दृश्य था

दृश्य था, दृश्य में अदृश्य था

बहुत कुछ अदृश्य में एक अजीब दृश्य था

अजीब दृश्य में एक अजीब आदमी था

अजीब आदमी, अदृश्य में दहाड़ता था

अदृश्य था, आदमी था, दहाड़ता था

चौखुता, चिह्नता और डकारता था

उसकी चौखुं, चिह्नहट्टें और डकारें

सर्वदा गूँजती रहती थीं दृश्य में

कहने को कहा जाता था यही-यही

कि दृश्य में सबसे अच्छे दिन थे

कि दृश्य में सबसे खुरे दिन थे

लोग हँसते थे कि रोते थे, पता नहीं

जरा भी किसी को पता नहीं होने देते थे

शायद हँसते-हँसते रोते थे, पता नहीं

शायद रोते-रोते हँसते थे, पता नहीं

यही एक अजीब कहानी थी अदृश्य में

जिसे दोहराती थी कविता दृश्य में

दृश्य था, दृश्य में अदृश्य था

एक आदमी था, एक दृश्य था.

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा प्रकाशित प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रियल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बाँबे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

## प्रधान संपादक

उमेश त्रिवेदी

## कार्यकारी प्रधान संपादक

अजय बोकिल

## संपादक (मध्यप्रदेश)

विनोद तिवारी

## स्थानीय संपादक

हेमंत पाल

## प्रबंध संपादक

रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,

Mobile No.: 09893032101

Email- subhassaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध नाना आवश्यक नहीं है।

## भूमध्य रेखा

## लघुकथा

## ब्रजेश कानूनगो



प्रभुदयालजी का समूचा सेवाकाल क्रोध से भरा हुआ निकला था। किसी भी बात या विचार को वे सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे। तुरंत प्रतिक्रिया देते, बहस करते और बड़ी मुश्किल से संतुष्ट हो पाते थे। इस प्रक्रिया में उनका व्यक्तित्व और व्यवहार भी बुरी तरह प्रभावित होता गया था। ऐसा लगता जैसे गुस्सा और बेचैनी उनका एक स्थायी भाव हो, उनकी भावभंगिमा से ऐसा ही सामान्यतौर से महसूस भी होता था। जब तक शरीर और मन शक्ति से भरा था उनका जीवन जैसे तेसे तेसे चट ही गया लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद यही स्वभाव उनकी बीमारी का बड़ा कारण बनता गया। दिनभर टीवी पर खबरिया चैनलों की उत्तेजक बहसों को देखते हुए परेशान होते रहते। भिन्न विचारधाराओं वाले प्रवक्ताओं के तर्कों और कुतर्कों से वे बहुत प्रभावित और उद्विग्न हो जाते। यह देखकर वे बहुत दुखी होते कि कोई दार्प की बात करता है तो कोई बाएँ की। इसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ने लगा। गहरे अवसाद और निराशा से उनका जीवन रसहीन होता गया।

अंततः उन्होंने टीवी पर उत्तेजक खबरिया बहसों को देखा बंद कर दिया। समय काटने को उन्होंने यूट्यूब पर विश्व यात्रियों के वीडियो देखा शुरू करके दुनिया को जानने समझने का नया विकल्प तलाश लिया। लेकिन उनका स्वभाव कैसे बदल सकता था,

## पुस्तक समीक्षा

## डॉ. रमेश चन्द मीणा

## समीक्षक

## इस तरह 'आदमी' जीवन-सत्य की संवेदनात्मक खोज

बौद्धिकता का बोझ उठाती है और न ही कृत्रिम अलंकरणों का सहारा लेती है। सहज, सरल और आत्मीय शैली में लिखी गई ये कविताएँ पाठक के मन में बिना किसी बाधा के प्रवेश करती हैं। ऐसा लगता है जैसे कवि कोई गूढ़ सत्य नहीं सुना रहा, बल्कि हमारे भीतर पहले से मौजूद अनुभूतियों को शब्द दे रहा है। इसीलिए संग्रह की कविताएँ 'आत्मलिपि' की तरह प्रतीत होती हैं-जिनमें कवि का जीवन ही नहीं, पाठक का अपना जीवन भी प्रतिबिंबित होता है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से यह संग्रह अत्यंत व्यापक है। इसमें मनुष्य के अस्तित्व, उसके संघर्ष, प्रेम, पीड़ा, अकेलेपन, आशा और विश्वास जैसे अनेक आयामों को स्पर्श किया गया है। 'खुशी का पत्थर', 'धूसर रंग', 'आदमी को आदमी रहने दें', 'यात्रा एक खोज है', 'विश्वास ही आखिरी रास्ता है' जैसी कविताएँ जीवन के सामान्य अनुभवों को असामान्य संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं में कहीं भी उपदेशात्मकता नहीं है; बल्कि वे अनुभवों के माध्यम से पाठक को स्वयं सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस संग्रह का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका दार्शनिक स्वर है। कवि जीवन के जटिल प्रश्नों को सरल भाषा में व्यक्त करता है। वह अस्तित्व, सत्य, और

लोगों के विचारों से सहमत होने में अब भी बड़ी कठिनाई आती थी, उनके भीतर संताप बना ही रहता था।

एक ट्रेवलर के यूट्यूब वीडियो में जब प्रभुदयालजी ने भूमध्य रेखा पर गुणांड का एक पर्यटन स्थल पर एक दिलचस्प प्रदर्शन देखा तो हतप्रभ रह गए। गुणांड में भूमध्य रेखा पर एक प्रसिद्ध टूरिस्टिक प्वाइंट है, जिसे 'इंक्रेटर लाइन' कहा जाता है। इस स्थान पर क्रमशः भूमध्य रेखा के दाहिने तरफ एक पात्र, एक पात्र ठीक भूमध्य रेखा पर तथा एक अन्य पात्र बाईं ओर रखा है। इन पात्रों में जब पानी के बीच फूल को रखा जाता है तो वह भूमध्य रेखा के पास में स्थिर रहता है लेकिन अन्य दोनों पात्रों में उसके घूमने की दिशा बिल्कुल विपरीत हो जाती है।

इस प्रयोग में पृथ्वी की घूर्णन गति के प्रभाव से उत्पन्न कोरिओलिस बल पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर तथा दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर कार्य करता है। जबकि भूमध्य रेखा पर, कोरिओलिस बल शून्य होता है। इसी वजह से उत्तरी गोलार्ध में, फूल दाईं ओर घूमने लगता है, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में, वह बाईं ओर घूमने लगता है। प्रभुदयालजी को अन्यायस इस वीडियो को देखते हुए जीवन में पुनः आनंद की वापसी का रास्ता दिखाई दे गया। मन ही मन सोचने लगे, जब समूची पृथ्वी भूमध्य रेखा के दोनों ओर अलग अलग तरह से व्यवहार करती है, अलग अलग दिशाओं में हवाएं बहती हैं, अलग अलग बल काम करते हैं तब भी पृथ्वी संतुलित है, उसका चक्र सहजता से कायम है तो फिर उनके लिए क्या मुश्किल हो सकती है। उन्होंने अपने मस्तिष्क में पहुँचने वाले भिन्न विचारों के विपरीत बलों के प्रभाव से व्यथित होने की बजाए भूमध्यरेखीय स्थिति को बनाए रखने का अभ्यास शुरू कर दिया। उनके जीवन में प्रसन्नता के फूल फिर से खिलने लगे।

## सूरज का कहर

## रामेश्वरम तिवारी



सूरज कहर बरपा रहा है, तेवर अपन दिखा रहा है।

जमीं का जिगर फट रहा, सरवर सूखा जा रहा है।

सूख से शाम तक मजदूर, बगैर पानी के नहा रहा है।

कृषक खेत को जोत रहा, खेद अपना बहा रहा है।

दीन दुबला हुआ जा रहा, धनी ऐश फरमा रहा है।

चरवाहे द्वारा तरवर-तले, आल्हा गाया जा रहा है।

## लीपापोती कला के क्या कहने

## व्यंग्य

## दिनेश विजयवर्गीय

## लेखक व्यंग्यकार हैं।



युवा प्रकर मुग्धी एक समाह बाद आज घर पर आया। वह अपने हाथ में समाचार पत्र लेकर लीपापोती लीपापोती बोला आया। मैंने कहा मुग्धी यह क्या लीपापोती लीपा पोती कहे जा रहे हो? इतने दिनों बाद आज कोई विशेष समाचार लेकर

आए हो क्या? तुम्हारी आदत पहेलियाँ बुझाने की है। सीधे-सीधे अपनी बात क्यों नहीं कर देते? अकल! आप यह बताएँ कि हमारे देश में लीपापोती की परंपरा कब से चल रही है? जो आज भी यह दोषी व्यक्ति को लापरवाही व गलतियाँ छुपाने में सहयोगी बनी हुई है। मुग्धी! देश में लीपापोती की परंपरा कब से चल रही है, इसके बारे में कुछ कह नहीं सकता। पर हाँ यह हमारी लोहरी परंपरा में वर्षों वर्षों से चल रही है। देश में दीपावली के अवसर पर गांव के कच्चे घरों में सीलन से उखड़े मिट्टी के प्लास्टर की मिट्टी गोबर से लीपकर नया लुक दिया जाता है। फिर मांडने मांड कर अकर्षक रूप देकर घर को सुसज्जित रूप दिया जाता है। शायद आज लोगों ने इसी लीपापोती की विशेषताओं को अपने हित और स्वार्थ साधने में उपयोग लेने लगे हैं। इसके चलते किंतु परतु ऐसा है वैसा है, आगे से ध्यान रखेंगे, जैसे- शब्दों की लापरवाही का सहारा लेकर अपनी गलतियों को ढकने का काम करते हैं। लीपापोती की क्षमता इतनी प्रभावी होती है कि वह निम्न कामन में भी गली निकाल दोषों को बचा लेती है।

अभी हाल ही में कुछ लोग जबलपुर के नर्मदा नदी के कर्जु नौका विहार में रोमांच का आनंद ले रहे थे। तभी अचानक तेज हवाओं के चलते कर्जु पलटी मार गया। उसमें बैठे लोगों ने सेफ जैकेट भी तभी पहनी जब तेज हवाएं शुरू हुईं और संतुलन बिगड़ने लगा। संचालक ने पहले जैकेट पहनने के संभावित मौसम का ध्यान नहीं रखा। तृपनी हवाओं के चलते कर्जु में पानी भरने लगा और डूबने लगा। लोग अपनी जान बचाने का जतन करने लगे। कुछ को मौत ने गले लगा लिया। एक मां भी अपने बच्चे के साथ उसमें वेदी थी। जान बचाने के फेर में मां ने बच्चे को अपनी बाँहों में जक

# भारत में विज्ञापन- भूमिका एवं उसकी उपयोगिता

लोग जिस पर विश्वास करते हैं, उसके कहे हर बातों को आँख बंद करके मान लेते हैं, जिसका फायदा विज्ञापन के निर्माण में लगे लोग लेते हैं। ऐसा लगने लगा है कि आज विज्ञापन की मायावी दुनिया ही तय करती है कि उपभोक्ता को बाजार से कब और क्या खरीदना है। वैसे खरीदना न खरीदना तो ग्राहक के मन की ही बात है पर विज्ञापन के मायावी प्रकोप का असर कहे कि अधिकांश लोग इसके जाल में फँस ही जाते हैं। बाकी रही-सही कसर पूरी कर देती है आस-पास की दुनिया। दुनिया संचार माध्यमों पर इतनी निर्भर हो गई है कि, खुद भी सोच सकती है, वहाँ तक सोच ही नहीं पाती। सामान के विक्री पर उत्पादन की अपनी विशेषता तो होती ही है पर विशेष असर विज्ञापन का ही होता है। वैसे अगर विज्ञापन के मुख्य कार्य को देखा जाय तो ग्राहकों को वस्तुओं से परिचय करवाना, उसके विशेषताओं से लोगों को रूबरू करवाना होता है। जिसके लिए पूरी टीम अपने-अपने स्तर पर जी जान से लगी होती है जहाँ नित नवीन खोज हेतु सपनों का आसमान बसता है।

आज जब सब कुछ हवा में ही तय होता है, हवा के इस दौर में भी विज्ञापन ही सब कुछ है। उत्पादक विज्ञापन पर खर्च करने में जरा सा भी नहीं हिचकते। बात विज्ञापन और कला की करें तो कलाकार निरंतर प्रयास से उत्पादक के द्वारा किए गए दावे को ध्यान में रखते हुए ऐसे दृश्य तैयार करता है कि ग्राहक वस्तु के प्राप्ति हेतु लक्ष्यलक्ष हो उठे। कलाकार के कल्पना का ही कमाल होता है कि जरूरत न होने के बावजूद भी लोग सामानों को मंगाने लगते हैं। 'भारी उत्पादन का कारण एवं परिणाम विज्ञापन है' नाइट्रोम के इस कथन ने विज्ञापन को बाकायदा बयां कर दिया है। समय ही ऐसा है कि सुबह से लेकर शाम तक कई रूपों में विज्ञापन हमारे सामने होता है और हम लाख चाकर भी इससे बच नहीं सकते। अखबार पलटते ही विज्ञापन, टीवी देखते ही विज्ञापन, रेडियो सुनते ही विज्ञापन, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टा हर जगह विज्ञापन की दुनिया से हम घिरे हुए हैं। बाहर निकलते ही होर्डिंग्स, बैनर, पोस्टर आदि हमें ललचाने लगते हैं। मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी विज्ञापन हमारे भावनाओं से खेलते हैं। इन सभी

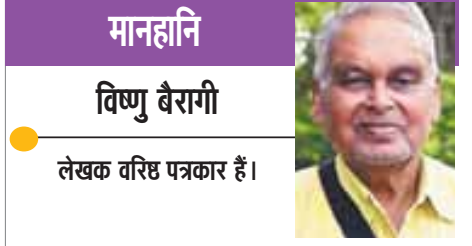
के पीछे जो टीम कार्य करती है उसे विज्ञापन एजेंसी कहा जाता है जहाँ इससे संबंधित सभी विषय के विशेषज्ञ बैठते हैं। उपभोक्ताओं के नब्ज को टटोलने वाले मनोवैज्ञानिक, कॉपी राइटर, क्रियात्मक रूप से

है इसे। कटु अनुभवों से भी पाला पड़ता रहा है लेकिन तमाम जद्दोजहद के बावजूद विज्ञापन के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। विज्ञापन हमेशा से हमारे बीच रहा है। विज्ञापन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। ललित कला एवं उपयोगी कला में उपयोगी कला के अंतर्गत आता है उपयोगी कलाकार, जिसका कार्य ही होता है ऐसे चित्रों का निर्माण करना जो लोगों के उपयोग में आ सके और फिर वो विज्ञापनदाता भी हो सकता है और ग्राहक भी। एक को बेचने की आवश्यकता है तो दूसरे को खरीदने की, फायदा दोनों का है। कलाकार या फिर पूरी एजेंसी बस पुल के रूप में दोनों को एक दूसरे तक पहुँचाने का कार्य करती है। कभी-कभी भ्रामक विज्ञापन भी सामने आ जाते हैं जिससे ग्राहकों का विश्वास विज्ञापन से उठ जाता है। अतः नैतिक एवं अनैतिक का दायरा यहाँ भी होना चाहिए। विज्ञापनदाता को चाहिए कि वही विशेषता एजेंसी को बताए जो वाकई उत्पाद में हो तथा विज्ञापन एजेंसी को अपने कार्य संपादित करने से पूर्व सभी बातों

पर गहनता से विचार करते हुए विज्ञापनदाता के कहे हर बातों को जाँच लेने के बाद ही विज्ञापन का निर्माण करना चाहिए ताकि ग्राहक खुद को ठगा हुआ महसूस ना करे। विज्ञापन दबी, छिपी इच्छाओं को आकाश प्रदान करने का भी कार्य करता है। विज्ञापनों को ऐसे तैयार किया जाता है कि विज्ञापित उत्पाद का यदि आपने प्रयोग नहीं किया तो आप बहुत पीछे हो जायेंगे, ऐसा महसूस होता है उपभोक्ता को। अगर ये नहीं पहना तो समझो आज तक आपने कुछ नहीं पहना' जैसे शब्दों का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है या यूँ कहे कि मन के किसी कोने में दबी इच्छाओं को ललकारने का कार्य भी विज्ञापन का ही है और सामान्य इंसान में भी समाज के अन्य से होड़ की पिपासा जगा देती है विज्ञापन फलतः- जिसकी आवश्यकता इंसान को नहीं भी है उसे भी देखा-देखी में खरीद लिया जाता है। आज का बाजार ही विज्ञापन के भरोसे है। कुछ विज्ञापन पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों हेतु अलग-अलग भी बनाए जाते हैं। परिवार में रिश्तों के महत्व को देखते हुए उन्हें यह भी अंदाजा होता है कि जिस सामान के लिए बच्चा बोल देगा पिता जरूर दिलाएगा इसलिए अलग-अलग किस्म और उम्र हेतु भी विज्ञापन तैयार किया जाता है। बाइक के विज्ञापन को इस तरीके से डिजाइन किया जाता है कि उस पर बैठने वाला खुद को समाज से अलग और चुस्त-दुरुस्त समझ बैठता है बाकी में हीन भावना जागृत हो इसका भी ध्यान रखा जाता है ताकि वो भी जल्द से इसे खरीद कर अपने श्रेणी में बढ़ोतरी करते हुए एक सही आगे बढ़ सके और विज्ञापन का कार्य भी पूरा हो सके।



का र-बार दोहराव के बल पर असत्य को भी सत्य साबित करने का पहल लगभग चल निकला है। हालाँकि सभी बातें असत्य हो ऐसा भी नहीं है पर विज्ञापन में अधिकांशतः उपभोक्ता को बहलाने हेतु बड़े-बड़े लालची तीर चलाए जाने लगे हैं। लोग जिस पर विश्वास करते हैं, उसके कहे हर बातों को आँख बंद करके मान लेते हैं, जिसका फायदा विज्ञापन के निर्माण में लगे लोग लेते हैं। ऐसा लगने लगा है कि आज विज्ञापन की मायावी दुनिया ही तय करती है कि उपभोक्ता को बाजार से कब और क्या खरीदना है। वैसे खरीदना न खरीदना तो ग्राहक के मन की ही बात है पर विज्ञापन के मायावी प्रकोप का असर कहे कि अधिकांश लोग इसके जाल में फँस ही जाते हैं। बाकी रही-सही कसर पूरी कर देती है आस-पास की दुनिया। दुनिया संचार माध्यमों पर इतनी निर्भर हो गई है कि, खुद भी सोच सकती है, वहाँ तक सोच ही नहीं पाती। सामान के विक्री पर उत्पादन की अपनी विशेषता तो होती ही है पर विशेष असर विज्ञापन का ही होता है। वैसे अगर विज्ञापन के मुख्य कार्य को देखा जाय तो ग्राहकों को वस्तुओं से परिचय करवाना, उसके विशेषताओं से लोगों को रूबरू करवाना होता है। जिसके लिए पूरी टीम अपने-अपने स्तर पर जी जान से लगी होती है जहाँ नित नवीन खोज हेतु सपनों का आसमान बसता है। विज्ञापन वस्तुओं के विक्रय की कला है। विज्ञापन वि तथा ज्ञापन शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ क्रमशः विशिष्ट एवं सूचना है। किसी भी वस्तु के बारे में विशिष्ट सूचना उपभोक्ता तक विशेष तरीके से पहुँचाना ही विज्ञापन है। उत्पाद एवं उपभोक्ता के बीच सेतु के रूप में विज्ञापन कार्य करता है पर वही सेतु कभी-कभी रास्ता भटकाने का कार्य करता है बल्कि आज का अधिकतर विज्ञापन ऐसा ही है। विस्टन चर्चिल ने विज्ञापन के बारे में गजब कहा है। उनका कहना है कि टकसाल के अतिरिक्त कोई भी बिना विज्ञापन के मुद्रा का उत्पादन नहीं कर सकता।



ब ठीक-ठीक स-सम्यक्त तो याद नहीं, शायद 1975-77 की बात होगी। मैं मन्दासौर में दैनिक 'दशपुर-दर्शन' का सम्पादक था। सब कुछ ठीक ही ठीक चल रहा था कि अचानक ही, मझौले स्तर के एक कारखानेदार से उलझन हो गई। वह हमारा विज्ञापनदाता भी था और मेरे सेठ का मिलनेवाला भी। उसके कारखाने में दुर्घटना हो गई। दो लोग गम्भीर घायल हो गए। वह चाहता था कि खबर हमारे अखबार में न छपे। संयोग ही रहा कि उसकी चाहत मुझ तक पहुँचती उससे पहले ही मेरे सेठ और मेरे बीच इस खबर पर बात हो चुकी थी। तय हो गया था कि खबर छपेगी। खबर छपी। केवल हमारे अखबार में ही नहीं, मन्दासौर-इन्दौर के सारे अखबारों में छपी। हम नहीं छापते तो हमें मुँह छिपाने की जगह नहीं ही मिलती। मुझे और मेरे सेठ को खुश तो हुई ही, तसल्ली भी हुई। दुर्घटना की कानूनी खानापूर्ति से निपटने के बाद कारखानेदार ने बुरी तरह से नाराज होते हुए, एक तरह से मेरी पेशी ही ले ली। मैंने खबर छापने को मेरा-अपना फैसला बताया। अपने सेठ का हवाला बिलकुल नहीं दिया। उसने विज्ञापन बन्द करने और 'देख लेने' की धमकी दी। महानगरों के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की कोई वकत नहीं होती। लेकिन जिला मुख्यालय स्तर के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की अनदेखी, फौरन तो नहीं हो पाती। सो दो-एक दिन मैं थोड़े तनाव में रहा। लेकिन उसके बाद जब कहीं, कोई हलचल नहीं हुई तो मैं बेफिकर हो गया। इतना कि सारी



पनों का भी अपना एक संसार होता है। हम सभी सपने देखते हैं, कभी जागते हुए तो कभी सोते हुए। सपने हम सबकी जिनदगी का एक अहम हिस्सा होते हैं। सपनों को लेकर कुछ अहम सवाल जिन पर अक्सर चर्चा होती है उनमें एक तो यह है कि क्या सपने सच होते हैं और क्या सपनों को साकार करने में भगवान की भी कोई भूमिका होती है? वीडियो इन डिमान्ड सेवा टीवीएफ एक बार फिर से सपनों और हकीकत की बीच झूलती कथावस्तु पर वेबसिरीज के एक नये सीजन को लेकर आया है और इस वेबसिरीज का शीर्षक है - सपने वरसे एवरीवन - टू। अमरीश वर्मा द्वारा लिखित और निर्देशित यह सिरीज इस बार केवल सपनों की बात नहीं करती है बल्कि उन सपनों को पाने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत पर भी सवाल उठाती है। यह एक ऐसी कहानी है जो जितनी प्रेरणादायक होने की कोशिश करती है, उतनी ही निराश और उद्वेग से भरने वाली भी है। दिल्ली की दबंग राजनीति और मुम्बई के अनिश्चित फिल्मी गलियारों की पृष्ठभूमि वाली यह सिरीज वास्तविकता के बेहद करीब रहने की कोशिश करती है, लेकिन बात वैसी बनती नहीं है जैसी अपेक्षित है। इस सीजन की कहानी के दो पक्ष हैं। एक तरफ जिम्मी मेहता (अमरीश वर्मा) है, जो दिल्ली के हालात में अपनी धाक जमाने की कोशिश कर रहा है। जिम्मी एक ऐसा युवक का है जो मानता है कि सफलता के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सब जायज है। वह रियल एस्टेट की दुनिया में खुद को बिकवाली का सर्वेसर्वा या यूँ कहें कि भगवान मानता है और अपने अहंकार को ही अपनी ढाल बनाता है। जिम्मी का मुख्य संघर्ष

## न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी को क्यों नहीं सूझी यह बात?

दुर्घटना की कानूनी खानापूर्ति से निपटने के बाद कारखानेदार ने बुरी तरह से नाराज होते हुए, एक तरह से मेरी पेशी ही ले ली। मैंने खबर छापने को मेरा-अपना फैसला बताया। अपने सेठ का हवाला बिलकुल नहीं दिया। उसने विज्ञापन बन्द करने और 'देख लेने' की धमकी दी। महानगरों के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की कोई वकत नहीं होती। लेकिन जिला मुख्यालय स्तर के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की अनदेखी, फौरन तो नहीं हो पाती। सो दो-एक दिन मैं थोड़े तनाव में रहा। लेकिन उसके बाद जब कहीं, कोई हलचल नहीं हुई तो मैं बेफिकर हो गया। इतना कि सारी बात भूल ही गया।

कोई महीना भर बाद मुझे जिला कोर्ट में जाना पड़ा तो एक परिचित वकील साहब मेरी बाँह पकड़कर एक ओर ले गए और पूरा किस्सा सुनाया। मैं जरूर सारी बात भूल गया था लेकिन कारखानेदार ने बात गॉट बाँध ली थी। जिन वकील साहब ने मुझे किस्सा सुनाया वे उस कारखानेदार के स्थायी वकील थे। दुर्घटना के करीब पखवाड़े भर बाद वह कारखानेदार वकील साहब के पास गया और मुझ पर और हमारे अखबार पर मानहानि का मुकदमा दायर करने की बात कही। वकील साहब ने मुझे बताया कि उन्होंने पूरी बात सुनी और अपने 'मालदार आसामी' को सलाह दी - 'देखो सेठ! मैं तो तुम्हारा वकील हूँ। जैसा तुम कहोगे, मुकदमा दायर कर दूँगा। मेरा तो काम ही यही है। मुझे मेरी मुँह-माँगी फीस मिल जाएगी। लेकिन मेरी सलाह है कि तुम इस मुकदमे की बात दिमाग से निकाल दो।' सेठ हैरत में पड़ गया। कोई वकील मुकदमा दायर न करने की सलाह



दे रहा है! वकील साहब ने समझाया - 'अभी तो केवल यही छपा है कि तुम्हारे कारखाने में दो मजदूर गम्भीर घायल हुए हैं। कारखाने के अन्दर की हालत और सुरक्षा इन्तजामात के बारे में कुछ नहीं छपा। अभी तो तुम्हारी पगड़ी भी नहीं हिली है। लेकिन यदि तुमने मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया तो भरी कोर्ट में तुम्हारे कपड़े उतर जाएँगे और वो भी खुद तुम्हारे हाथों से। वो-वो जानकारियाँ, वो-वो बातें सामने आ जाएँगी कि कारखानेका लायसेंस केंसल होने की नौबत न आ जाए।' वकील साहब ने कहा - 'जिस गुप्से में वो आया था उसे देखकर मुझे बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि वो मेरी बात मान जाएगा। लेकिन भगवान ने उसे सद्बुद्धि दी। उसे मेरी बात की गम्भीरता महसूस हो गई और चुपचाप चला गया।' दिल्ली उच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ता शर्मा के ताजा फैसले ने मुझे यह किस्सा याद दिला दिया। वे अरविन्द केजरीवाल के विरुद्ध मुकदमा सुन रही थीं और

केजरीवाल ने उनकी निष्पक्षता पर सन्देह करते हुए माँग की थी कि वे इस मामले की सुनवाई से हट जाएँ। न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ता शर्मा ने केजरीवाल की माँग शुरू में तो ठुकरा दी थी। लेकिन अन्ततः उन्होंने हटने का फैसला कर लिया। लेकिन वे यहाँ नहीं रुकीं। उन्होंने कहा कि वे केजरीवाल और मुकदमे में उनके अन्य सथियों के विरुद्ध मानहानि का आपराधिक मुकदमा दर्ज करेंगी। यह जानकर ही मुझे हैरत के साथ मेरेवाला यह किस्सा याद आ गया। अब तक तो केजरीवाल उनके सामने याची/वादी या कि प्रार्थी थे। न्यायालय, न्यायाधीश और न्यायपालिका के प्रति सम्मान बरतने की विवशता के अधीन वे बहुत सारी बातें कह नहीं पाए होंगे। लेकिन यदि न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी ने मुकदमा दायर कर दिया तो वे 'न्यायमूर्ति' न रहकर याची/वादी या कि प्रार्थी की हैसियत में कोर्ट के सामने होंगी। तब केजरीवाल उनके प्रतिवादी होंगे। याने, वे केजरीवाल को अपने बराबर की हैसियत में ला खड़ा कर देंगी। तब केजरीवाल उनसे वे बातें भी पूछेंगे जो स्वर्णकान्ताजी के न्यायमूर्ति होने की वजह से नहीं पूछ/कह पाए होंगे। सड़कछाप लोगों की जवान में कहे तो आँखों का लिहाज टूटेगा। कर्द के छिन्नक उतरने शुरू हो जाएँगे और उसके बाद बात कहीं तक जाएगी, केवल सोचा ही जा सकता है। मेरेवाले किस्से को करीब पचास बरस होने को आ रहे हैं। यह किस्सा लिखते हुए मैं सोच रहा हूँ - जिला कोर्ट के एक सामान्य वकील को जो बात, पचास बरस पहले सूझी थी, न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी को नहीं सूझी होगी?

## सपनों और हकीकत के बीच झूलती एक वेबसिरीज

अमरीश वर्मा द्वारा लिखित और निर्देशित यह सिरीज इस बार केवल सपनों की बात नहीं करती है बल्कि उन सपनों को पाने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत पर भी सवाल उठाती है। यह एक ऐसी कहानी है जो जितनी प्रेरणादायक होने की कोशिश करती है, उतनी ही निराश और उद्वेग से भरने वाली भी है। दिल्ली की दबंग राजनीति और मुम्बई के अनिश्चित फिल्मी गलियारों की पृष्ठभूमि वाली यह सिरीज वास्तविकता के बेहद करीब रहने की कोशिश करती है, लेकिन बात वैसी बनती नहीं है जैसी अपेक्षित है। इस सीजन की कहानी के दो पक्ष हैं। एक तरफ जिम्मी मेहता (अमरीश वर्मा) है, जो दिल्ली के हालात में अपनी धाक जमाने की कोशिश कर रहा है। जिम्मी एक ऐसा युवक का है जो मानता है कि सफलता के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सब जायज है। वह रियल एस्टेट की दुनिया में खुद को बिकवाली का सर्वेसर्वा या यूँ कहें कि भगवान मानता है और अपने अहंकार को ही अपनी ढाल बनाता है। जिम्मी का मुख्य संघर्ष अपने चाचा कुकरेजा (विजयांत कोहली) से है। वह अपने चाचा की राजनीतिक और व्यावसायिक विरासत को ध्वस्त करने के लिए न केवल उनके घर के ठीक सामने एक इमारत खड़ी करता है, बल्कि उन्हें चिढ़ाने के लिए एक विवादित प्रतिमा भी लगा देता है। जिम्मी का पूरा जोर गुरुग्राम की राजनीति में अपना दबदबा बनाने पर है, लेकिन उसकी योजना में 'टोनी' (अभिषेक चौहान) की एण्ट्री सब कुछ बदल देती है। टोनी दिखने में सौम्य है, अन्दर से कहीं ज्यादा प्रतिशोधी और चालाक निकलता है। दूसरी तरफ जिम्मी का दोस्त प्रशांत (परमवीर सिंह चीमा) है, जिसका सपना अभिनय की दुनिया में नाम कमाना है। अमरीश वर्मा ने न केवल लेखन और निर्देशन की जिम्मेदारी संभाली है, बल्कि जिम्मी मेहता की भूमिका में उन्होंने शानदार अभिनय किया है। उनके अभिनय पर इमरान हाशमी की शैली का प्रभाव साफ

झलकता है, फिर भी वे अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। जिम्मी का सख्त मिजाज उसका आत्मविश्वास और अपमान का बदला लेने की उसकी तीव्र इच्छा को अमरीश ने पद पर बहुत प्रभावशाली ढंग से उतारा है। परमवीर सिंह चीमा ने प्रशांत के रूप में अपने जटिल चरित्र को बेहतरीन सन्तुलन के साथ पेश किया है। एक स्टूडनल की हताशा, उसकी आँखों में चमकता सपना और दोस्तों के प्रति वफादारी चीमा ने इन सभी भावनाओं को बहुत ही सहजता से जिया है। उनके किरदार के माध्यम से दर्शक खुद को जोड़ पाते हैं, क्योंकि वह उन नैतिक दुविधाओं से गुजरता है जो हर आम इंसान के सामने आती हैं। अमरीश वर्मा का निर्देशन इस सीजन में अधिक परिपक्व है। उन्होंने दिल्ली और मुम्बई की लय को पकड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। दिल्ली के दृश्यों में सत्तापक्ष



का नाम और स्वैग दिखाई देता है तो मुम्बई के दृश्यों में एक तरह की घुटन और निरन्तर प्रतीक्षा है। लेखक के तौर पर अमरीश ने कहानी को एक प्रैमैटिक मोड़ दिया है। वे किसी जादुई हेप्पी एंडिंग के पीछे नहीं भागते, बल्कि यह दिखाते हैं कि असल जिन्दगी में जीत के साथ-साथ दिल टूटने और विश्वासघात की घटनाएँ भी उतनी ही सामान्य होती हैं। तकनीकी रूप से यह एक शानदार सिरीज है। सिनेमैटोग्राफी ने दोनों शहरों के अन्तर को राँगों और लाइटिंग के जरिए बहुत खूबसूरती से पेश किया है। दिल्ली के दृश्यों में शाप कलर्स और खुलापन है, जबकि मुंबई के संघर्ष को तंग गलियों और कम रोशनी वाले कमरों के जरिए महसूस कराया गया है। बैकग्राउंड स्कोर सिरीज के मिजाज के अनुरूप है। यह कहानी की गंभीरता और तनाव को बढ़ाने में मदद करता है। एडिटिंग थोड़ी और चुस्त हो सकती थी, क्योंकि पाँच कड़ियों के इस शो में कुछ सीन काफी लम्बे खिंचे हुए लगते हैं, जो कहानी की गति को धीमा कर देते हैं। बावजूद इसके सिरीज का तकनीकी ढाँचा इसे एक प्रीमियम अनुभव बनाता है।

अधिक परिपक्व है। उन्होंने दिल्ली और मुम्बई की लय को पकड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। दिल्ली के दृश्यों में सत्तापक्ष

## दीपक वोहरा जैसे वैश्विक व्यक्तित्व का आगमन जन परिषद के लिए गौरव का विषय: अरुण किलेदार जन परिषद के वार्षिक उत्सव में पुलिस महानिदेशक, एयर मार्शल एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी भी होंगे शामिल



बैतूल। अग्रणी सामाजिक संस्था जन परिषद के वार्षिक उत्सव में दीपक वोहरा जैसे वैश्विक व्यक्तित्व का आगमन जन परिषद के लिए गौरव का विषय है। इस वर्ष आगामी 23 जून को भोपाल में जन परिषद का 37 वा वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पूर्व राजनयिक व भारत सरकार के वरिष्ठ पूर्व राजदूत दीपक वोहरा की उपस्थिति आयोजन का मुख्य आकर्षण रहेगी। उन्होंने कार्यक्रम में आने की स्वीकृति दे दी है। उनके आगमन को लेकर जन परिषद के पदाधिकारियों एवं क्षेत्र के लोगों में उत्साह का वातावरण है। यह बातें जन परिषद के संरक्षक अरुण किलेदार ने कहीं। जन परिषद के वार्षिकोत्सव के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए संरक्षक अरुण किलेदार एवं संपादकीय उपाध्यक्ष मोहन अग्रवाल ने बताया कि दीपक वोहरा भारतीय विदेश सेवा के

प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त राजनयिक रहे हैं। उन्होंने आर्मेनिया, जॉर्जिया, सूडान, दक्षिण सूडान एवं पोलैंड सहित कई देशों में भारत के राजदूत के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी हैं। इसके अलावा वे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों एवं रणनीतिक विषयों के विशेषज्ञ के रूप में भी अपनी पहचान रखते हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व की उपस्थिति से जन परिषद के वार्षिक उत्सव को नई पहचान एवं गरिमा प्राप्त होगी।

जन परिषद बैतूल चैप्टर के अध्यक्ष विजय दीक्षित ने बताया कि समारोह में मंत्र के पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना, एयर मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव तथा मंत्र शासन के एडिशनल चीफ सेक्रेटरी अनुपम राजन को भी आमंत्रित किया गया है। इन प्रतिष्ठित हस्तियों की उपस्थिति से समारोह को विशेष गरिमा प्राप्त होगी। जन परिषद के मीडिया प्रभारी संजय द्विवेदी ने बताया कि प्रतिवर्ष की

परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को मंच पर सम्मानित किया जाएगा। गौरतलब है कि जन परिषद के कार्यक्रम के माध्यम से समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। जन परिषद के इंटर स्टेट कमेटी सचिव कैलाश प्रसाद अग्निहोत्री ने जनपरिषद अध्यक्ष एन.के. त्रिपाठी एवं संयोजक रामजी श्रीवास्तव के नेतृत्व एवं प्रयासों की सराहना करते कहा कि उनकी दूरदर्शिता एवं उत्कृष्ट आयोजन क्षमता के कारण ही इस स्तर का आयोजन संभव हो पा रहा है। उन्होंने आयोजन से जुड़े सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए अधिक से अधिक लोगों से कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

## धनौरा समूह नल-जल योजना के ट्रीटमेंट प्लांट का कलेक्टर ने किया निरीक्षण, पेयजल विस्तार योजना पर दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सोम सोनवणे ने शुक्रवार को आठनेर विकासखंड के भ्रमण के दौरान धनौरा समूह नल-जल योजना के जल शुद्धिकरण संयंत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता, पेयजल आपूर्ति व्यवस्था एवं भविष्य की विस्तार योजनाओं की विस्तृत जानकारी अधिकारियों से प्राप्त की। पीएचई विभाग के अधिकारियों ने बताया कि जल शुद्धिकरण प्लांट की क्षमता 3.76 एमएलडी है



तथा वर्तमान में योजना के माध्यम से 22 ग्रामों को पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने ग्राम जावरा में पेयजल आपूर्ति की स्थिति के संबंध में जानकारी ली। अधिकारियों ने बताया कि ग्राम की जनसंख्या के अनुसार 55 एलपीसीडी मानक के तहत प्रतिदिन पेयजल प्रदाय किया जा रहा है। योजना का क्रियान्वयन वर्ष 2014-15 में किया गया था तथा वर्तमान में प्लांट पूर्ण क्षमता से संचालित हो रहा है। हालांकि, ग्रामों में जनसंख्या वृद्धि के कारण पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। कलेक्टर ने अधिकारियों से पूछा कि प्लांट की क्षमता बढ़ाने के लिए क्या कार्ययोजना बनाई गई है तथा क्या इसे निर्गुण जलाशय से जोड़ा जा सकता है। साथ ही उन्होंने आठनेर विकासखंड के शेष ग्रामों को समूह नल-जल योजना से जोड़ने की संभावनाओं पर भी चर्चा की। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने जल परीक्षण प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। उन्होंने पानी की गुणवत्ता जांच की प्रक्रिया को देखा तथा एक सैंपल की टेस्टिंग का निरीक्षण किया। इसके साथ ही उन्होंने लैब में संचारित रिपोर्ट का भी परीक्षण कर गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

## हापुस आम की सुगंध से महका प्रांगण

भोपाल। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष 15 से 17 मई तक श्री दत्त मंदिर हॉल में अलफांसे/हापुस आम की प्रदर्शनी/विक्रय का उद्घाटन वाई 45 की पार्षद शिखा गोहिल ने किया। इस अवसर पर विलास बुचके, रोहिणी शिगवेकर, संजय जोशी, नीला करबेलकर, उपासनी के साथ ही बड़ी संख्या में आम के शौकीन उपस्थित थे पार्षद शिखा गोहिल का स्वागत आयोजक भरत साठे व ज्योति साठे ने किया। अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। साथ ही रत्नागिरी, देवगढ़, कांफण महाराष्ट्र के किसान भाइयों से संवाद साधा व आम की विशेषताओं को जाना। हापुसआम का स्वाद भी चखा।



उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र के कांफण क्षेत्र में ही यह आम का उत्पादन होता है। इसे जीआई टैग भी प्राप्त है। हापुस आम की अब भारत के साथ पूरी दुनिया में मांग बढ़ने लगी है। भोपाल में इस प्रदर्शनी का आयोजन भरत साठे, ज्योति साठे विगत 3 वर्षों से

करते आ रहे हैं। आज प्रदर्शनी का अंतिम दिन है। इस वर्ष भी 1500पैटी आम भोपाल में प्रदर्शनी में विक्रय हेतु आया है। पहले दिन ही आम लेने वाले की कतार लगी रही। यह प्रदर्शनी सुबह 10 से रात 9 बजे तक खुली रहती है।

# प्रदेश में निरंतर सशक्त हो रही स्वास्थ्य सेवाएं: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

## नवजात एवं मातृ स्वास्थ्य के क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने की उल्लेखनीय प्रगति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को निरंतर सशक्त एवं उन्नत बनाया जा रहा है। प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के साथ ही उनकी सतत एवं सशक्त निगरानी सुनिश्चित की जा रही है, जिससे आमजन को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुविधाएं समय पर उपलब्ध हो सकें। महिला एवं शिशु स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार द्वारा आधुनिक स्वास्थ्य अधोसंरचना, विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं एवं प्रभावी मॉनिटरिंग तंत्र को मजबूत किया जा रहा है। इन प्रयासों से प्रदेश में नवजात एवं मातृ स्वास्थ्य संकेतकों में सतत सुधार दर्ज किया जा रहा है।

**नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयों का सशक्त संचालन-** राज्य में जन्म के समय कम वजन वाले, समय पूर्व जन्मे एवं जन्म के समय गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के बेहतर उपचार और नवजात मृत्यु दर में कमी लाने के उद्देश्य से नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयों (एसएनसीयू) प्रभावी रूप से संचालित की जा रही हैं। इन इकाइयों से नवजात शिशुओं को विशेषज्ञ उपचार, आधुनिक चिकित्सा उपकरण एवं प्रशिक्षित चिकित्सकीय देखरेख उपलब्ध कराई जा रही है।

**उपचार एवं डिस्चार्ज दर में उल्लेखनीय वृद्धि-** वर्ष 2024-25 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2025-26 में नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयों के प्रदर्शन में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 24-25 में जहाँ 1 लाख 29 हजार 212 नवजात शिशुओं को उपचार प्रदान किया गया था, वहीं वर्ष 25-26 में यह संख्या बढ़कर 1 लाख 34 हजार 410 तक पहुँच गई है। साथ ही नवजात शिशुओं की सफलतापूर्वक डिस्चार्ज दर भी अब तक के सर्वोच्च स्तर 82.3 प्रतिशत पर पहुँच गई है।

## आधुनिक उपकरणों एवं विशेषज्ञ उपचार की उपलब्धता

राज्य सरकार गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के उपचार के लिये अत्याधुनिक एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य की एसएनसीयू इकाइयों में जटिल एवं गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के उपचार के लिये वेंटिलेटर, सी-पैप, निर्बाध ऑक्सीजन, फोटोथेरेपी सहित आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। साथ ही, फैसिलिटी बेस्ड न्यूबॉर्न केयर (एफबीएनसी) में प्रशिक्षित चिकित्सकों एवं नर्सिंग ऑफिसर्स द्वारा वैज्ञानिक एवं गुणवत्तापूर्ण उपचार प्रदान किया जा रहा है। इन इकाइयों में भर्ती नवजात शिशुओं को आवश्यकता अनुसार वेंटिलेटर सपोर्ट, सी-पैप, फोटोथेरेपी एवं ऑक्सीजन सपोर्ट उपलब्ध कराया जा रहा है तथा एंटीबायोटिक के तार्किक उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही सर्फैक्टेंट एवं कैफेन सल्यूट जैसे आधुनिक औषधियों के उपयोग से समय पूर्व जन्मे गंभीर नवजात शिशुओं का उपचार कर जीवन संरक्षित किया जा रहा है।

## टीकमगढ़ में ट्रक-बाइक की टक्कर, दो युवकों की मौत

## बड़ागांव धसन में ओवरटेक के दौरान हादसा; यूपी से कीटनाशक लेकर लौट रहे थे

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले के बड़ागांव धसन थाना क्षेत्र में शनिवार शाम करीब 5 बजे सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई। भदौरा पेट्रोल पंप के पास एक बाइक सवार युवक चार पहिया वाहन को ओवरटेक कर रहे थे, तभी सामने से आ रहे ट्रक से उनकी भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों बाइक सवारों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

**कीटनाशक लेकर उत्तर प्रदेश से लौट रहे थे-** मृतकों की पहचान छतरपुर जिले के सोरखी निवासी सत्येंद्र यादव और झांखर निवासी शोभरान यादव के रूप में हुई है। ये दोनों उत्तर प्रदेश के मड़वाड़ा से फसल के लिए कीटनाशक खरीदकर अपने गांव लौट रहे थे। पुलिस ने दोनों शवों को बड़ागांव अस्पताल पहुंचाया और परिजनों को घटना की सूचना दी।

## दिविजय सिंह का केंद्र सरकार पर हमला

# बोले- पेट्रोल-डीजल और आर्थिक संकट की बड़ी वजह मोदी सरकार में लीडरशिप का अभाव

भोपाल (नप्र)। मंत्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिविजय सिंह ने देश में बढ़ते आर्थिक संकट और महंगाई को लेकर केंद्र सरकार पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भारत में मौजूदा आर्थिक संकट की बड़ी वजह मोदी सरकार में लीडरशिप क्राइसिस, दूरदर्शी सोच का अभाव और अक्षमता है।

दिविजय ने इसे मोदी सरकार द्वारा निर्मित संकट बताया है। कहा कि इसका खामियाजा देश की जनता पेट्रोल, डीजल और एलपीजी के बढ़ते दामों के रूप में भुगत रही है। सोशल मीडिया पर शनिवार सुबह किए गए पोस्ट में दिविजय सिंह ने लिखा कि देश की जनता को यह समझना होगा कि अंतरराष्ट्रीय इंधन क्राइसिस के साथ-साथ भारत में आर्थिक संकट की वजह केंद्र सरकार की नीतियां भी हैं।

उन्होंने कहा कि डीजल के दाम बढ़ने से पूरे देश में महंगाई का असर पड़ता है, जिसका असर उद्योगों, किसानों और घरेलू बजट पर आता है। पूर्व मुख्यमंत्री ने पश्चिम एशिया युद्ध का जिक्र करते हुए कहा कि जब संकट शुरू हुआ तब देश को सब चंगा सी बताया गया और कांग्रेस के सवाल को नजरअंदाज किया गया। उन्होंने आरोप

## दिविजय ने पूछे दो सवाल

दिविजय सिंह ने केंद्र सरकार से दो सवाल भी पूछे। उन्होंने कहा कि मार्च में रूसी तेल खरीदने के लिए 30 दिन का समय दिया गया था। उन्होंने सवाल उठाया कि प्रधानमंत्री देश को ऐसी स्थिति में क्यों ले आए जहां भारत को अनुमति मांगनी पड़ रही है। उन्होंने दूसरा सवाल पूछते हुए कहा कि जब अंतरराष्ट्रीय कच्चा तेल के दाम कम थे, तब मोदी सरकार ने जनता को राहत देने के बजाय करों के जरिए 10 साल में 43 लाख करोड़ कमाए। अब जनता पर महंगाई का अतिरिक्त बोझ क्यों डाला जा रहा है?



लगाया कि सरकार ने समय रहते कोई ठोस कदम नहीं उठाए। दिविजय ने कहा कि अमेरिकी अनुमति के चलते भारत की संप्रभुता को गिरवी रखने जैसी स्थिति पैदा हो गई है।

# श्रीमद्भागवत में पूरा तत्व समाया है, मनुष्य जीवन दुर्लभ है उसे जीवन में एक बार अवश्य ही श्रीमद्भागवत का अध्ययन करना चाहिए: डॉ काशीनाथ मिश्र उड़ीसा

# दमोह में चचेरे भाई-बहन की मौत, तीन अस्पताल में भर्ती

## परिजन बोले- कमरे में रखे गेहूं में डाला था कीटनाशक

दमोह (नप्र)। दमोह जिले के पथरिया थाना क्षेत्र के जेरठ गांव में दो चचेरे भाई-बहन की मौत हो गई, जबकि परिवार के दो अन्य बच्चे और एक महिला बीमार हैं। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, गेहूं को कीड़ों से बचाने के लिए उसमें डाली गई कीटनाशक दवा की गंध इस हादसे की वजह मानी जा रही है। मृतक बच्ची भावना (12) के पिता दामोदर लोधी ने बताया कि उन्होंने करीब 8 दिन पहले उस कमरे में रखे 80 बोरी गेहूं में कीटनाशक दवा डाली थी, जहां पूरा परिवार सोता है। शुक्रवार सुबह भावना और उसके 7 साल के चचेरे भाई समीर को अचानक उल्टियां होने लगीं। दोपहर होते-होते दोनों की हालत इतनी बिगड़ी कि अस्पताल ले जाते समय उनकी मौत हो गई। समीर की मां विनीता का भी एक प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है।

**दो और बच्चे हुए बीमार-** दो बच्चों की मौत के कुछ ही घंटों बाद परिवार के दो और बच्चे, 10 साल का विनय और 3 साल का दीपक भी बीमार हो गए। उन्हें तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां डॉक्टर उनका इलाज कर रहे हैं। पीड़ित बच्चे विनय के पिता दामोदर लोधी का कहना है कि उन्होंने उस गेहूं को खाया नहीं था, बल्कि कीटनाशक की तेज गंध की वजह से ही सबकी तबीयत खराब हुई है। पीड़ित परिवार ने आशंका जताई है कि दुकानदार ने उन्हें जरूरत से ज्यादा तेज गंध वाली दवा दे दी थी।

जिला अस्पताल के डॉक्टर बहादुर सिंह के मुताबिक, यह मामला पॉजिटिव का ही लग रहा है। बच्चों को उल्टियां होने के बाद मृत हालत में अस्पताल लाया गया था।



कभी किसी को भी जुठन नहीं खिलाएं। क्योंकि फिर अगले जन्म में आपको ऐसी ही जुठन खानी पड़ेगी। इससे बचें, इस पर मंथन करें। आप केवल घर में एक मुझे भर अनाज निकालें। आपको ज्यादा नहीं करना है। पराई पीड़ा जानकर उसका सद उपयोग करें। सुबह शाम दूसरों के हित की सोचें। ऐसा नहीं कि यह मुझे मिल जाए, वह मुझे मिल जाए। क्योंकि मृत्यु होने पर कोई कुछ साथ नहीं ले जाता। जीव जन्तुओं को पुत्र तरह पालन करें। वर्तमान में कैसर, लीवर, आदि रोगों से नागरिक पीड़ित हैं। वे दूसरे के अवगुण को देखते हैं। मानव जीवन में विकृतियां घर कर गई हैं। आज जो विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। उसी परिणाम है कि घातक बीमारियां हावी हो रही हैं। वेद व्यास जी कहते हैं कि पर पीड़ा देखें। आपने आगे कहा कि आजकल तर्पण लगभग नहीं हो रहे हैं। मैं आपसे कहता हूँ कि



पूर्व के तरफ जल अर्पित करें साथ बार, दक्षिण दिशा की तरफ तीन बार पितरों को जल अर्पित करें। आपने धुब एवं प्रह्लाद की समर्पण एवं भक्ति का उत्कृष्ट वर्णन करते हुए कहा कि कितनी कम उम्र में परमपद प्राप्त कर लिया था। वहीं दासी पुत्र महर्षि नारद जी तीनों लोकों आकाश, स्वर्ग, पाताल, धरती पर कहीं बेरोकटोक आज सकते हैं। भक्ति में ही शक्ति निहित है। आपने अंत में कहा कि मानव जीव को एक बार श्रीमद्भागवत पुराण का एक बार अवश्य अध्ययन पढ़ना चाहिए। श्रीमद्भागवत के बिना मुक्ति कैसे मिलेगी।

श्रीमद्भागवत वेद व्यास जी भी कहते हैं कि श्रीमद्भागवत के बिना मुक्ति कैसे संभव है। इसका बार बार अध्ययन करें। मनुष्य से मृत्यु पर्यंत श्रीमद्भागवत पढ़ते रहें। इससे मानव जीवन का बड़ा



भाग्य बन जाता है। भगवान् सबका शुभ मंगल करते हैं। मानव को जीवन पर्यंत मनुष्य को पराए पर भी उपकार करना चाहिए। तभी मनुष्य की जीवन सार्थक है। सर्व भवन्तु सुखिन सुखना मूल आधार है। जीवन सुबह शाम यही कहे सब सुखी रहें। निरोगी काया कर दो। सभी भगवान के शरण में जाएं। तभी मानव को मुक्ति मिलेगी। आपने अंत में कहा कि वर्तमान में धर्म का व्यवसायीकरण हो गया है। इस अवसर पर मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक भगवान् के गीतों पर नृत्य करने से अपने को रोक नहीं पाए। इस अवसर पर भारी संख्या में मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसके पूर्व डॉक्टर पंडित काशीनाथ जी मिश्र के आगमन पर रास्ते पर फूल बिछाए गए थे। उनकी आगवानी खूबचदानी परिवार ने की। सभा के उपरंत प्रसाद का विवरण किया गया।

## 59 की माधुरी दीक्षित

## 'मोहिनी' से 'मां-बहन' के डिजिटल अवतार तक

हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ नाम ऐसे होते हैं, जो केवल अभिनय तक सीमित नहीं रहते, बल्कि एक युग की पहचान बन जाते हैं। 'धक्-धक् गल' के नाम से मशहूर माधुरी दीक्षित ने भी एक ऐसा ही नाम है। उन्होंने अपने लंबे अभिनय करियर में कई सफल फिल्मों दी। अपनी समकालीन अभिनेत्रियों में वे बहुत आगे रहीं, पर फिल्मों में उनकी पारी कोई चमत्कार नहीं दिखा सकी। अब माधुरी दीक्षित अपना 59वां जन्मदिन मना रही हैं।

अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के 59वें जन्मदिन को उनकी आगामी फिल्म 'मां-बहन' की घोषणा ने ख़ास बना दिया, जो नेटफ्लिक्स पर 4 जून को रिलीज होने वाली है। यह महज एक फिल्म नहीं, बल्कि माधुरी के करियर का एक नया और रोमांचक पड़ाव है। 15 मई 1967 को मुंबई में जन्मी माधुरी दीक्षित ने अपने करियर की शुरुआत 1984 में फिल्म 'अबोध' से की थी। हालांकि, शुरुआती कुछ साल उनके लिए संघर्षपूर्ण रहे। लेकिन 1988 में आई फिल्म 'तेजाब' ने रातों-रात उनकी किस्मत बदल दी। 'एक दो तीन' गाने पर उनके डांस और उनकी मुस्कान ने पूरे देश को अपना दीवाना बना लिया। इसके बाद राम लखन, परिदा और 'त्रिदेव' जैसी फिल्मों ने उन्हें सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया।

90 के दशक में माधुरी दीक्षित बॉलीवुड की इकलौती ऐसी अभिनेत्री थीं, जिनकी स्टार वैल्यू खान सुपरस्टार्स के बराबर मानी जाती थी। उन्होंने न केवल अपनी अदाओं से बल्कि अपनी संजीदा एक्टिंग से भी लोहा मनवाया। 'बेटा' फिल्म के लिए उन्हें 'धक्-धक् गल' का खिताब मिला और उन्होंने साबित किया कि वह एक सशक्त अभिनेत्री हैं। 'हम आपके हैं कौन' ने भारतीय



विवाहों और पारिवारिक मूल्यों की परिभाषा ही बदल दी। निशा के किशोर में माधुरी ने जो सादगी और शरारत दिखाई, वह आज भी मिसाल है। 'मृत्युदंड' और 'लाजवंती' फिल्मों के जरिए उन्होंने दिखा दिया कि वह केवल ग्लैमरस भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर आधारित गंभीर सिनेमा की भी वह मल्लिका है।

माधुरी दीक्षित एक प्रशिक्षित कथक नृत्यांगना



हैं। पंडित बिरजू महाराज ने भी उनकी प्रतिभा की सराहना की थी। 'देवदास' का 'मार डाला' हो या 'पूकार' का 'के सेरा सेरा', माधुरी के कदम जब भी थिरके, उन्होंने इतिहास रचा। उनकी आंखों की



सफलता के शिखर पर रहते हुए माधुरी ने डॉ श्रीराम नेने से विवाह किया और अमेरिका चली गईं। एक दशक तक सिनेमा से दूर रहने के बाद जब उन्होंने वापसी की, तो दर्शकों ने उन्हें वैसा ही प्यार दिया। वह न केवल एक महान अभिनेत्री हैं, बल्कि एक सर्वांगीण मां और पत्नी भी हैं। आज के दौर में भी वह रियलिटी शो और सोशल मीडिया के जरिए नई पीढ़ी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई हैं। माधुरी दीक्षित का 59 साल का सफर यह सिखाता है कि प्रतिभा कभी बूढ़ी नहीं होती। 'तेजाब' की मोहिनी से लेकर 'मां-बहन' की रेखा तक, उन्होंने खुद को समय के साथ ढाला है। नेटफ्लिक्स की निदेशक रुचिका कपूर शोध के अनुसार, यह फिल्म माधुरी को एक ऐसे रोमांचक मोड़ पर पेश करेगी जो दर्शकों ने पहले

सुरेश त्रिवेणी (जो 'तुम्हारी सुलु' और 'जलसा' जैसी बेहतरीन फिल्में दे चुके हैं) के निर्देशन में बनी यह फिल्म 4 जून को नेटफ्लिक्स पर दस्तक देगी। कहानी 'रेखा' (माधुरी दीक्षित) नाम की एक मां के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पहले से ही घर की तमाम जिम्मेदारियों के बोझ तले दबी है। कहानी में मोड़ तब आता है जब उसे अपनी रसोई में एक लाश मिलती है। फिल्म में माधुरी के साथ तुषि डिमरी और धरना दुर्गा नजर आएंगी। यह लिक्विड मिलकर झूठ बोलने, पड़ोसियों से सच छुपाने और उस मुसीबत से निकलने की जद्दोजहद करती है। इसमें रवि किशन, गीतांजलि कुलकर्णी और अरुणोदय सिंह जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में हैं।

सफलता के शिखर पर रहते हुए माधुरी ने डॉ श्रीराम नेने से विवाह किया और अमेरिका चली गईं। एक दशक तक सिनेमा से दूर रहने के बाद जब उन्होंने वापसी की, तो दर्शकों ने उन्हें वैसा ही प्यार दिया। वह न केवल एक महान अभिनेत्री हैं, बल्कि एक सर्वांगीण मां और पत्नी भी हैं। आज के दौर में भी वह रियलिटी शो और सोशल मीडिया के जरिए नई पीढ़ी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई हैं। माधुरी दीक्षित का 59 साल का सफर यह सिखाता है कि प्रतिभा कभी बूढ़ी नहीं होती। 'तेजाब' की मोहिनी से लेकर 'मां-बहन' की रेखा तक, उन्होंने खुद को समय के साथ ढाला है। नेटफ्लिक्स की निदेशक रुचिका कपूर शोध के अनुसार, यह फिल्म माधुरी को एक ऐसे रोमांचक मोड़ पर पेश करेगी जो दर्शकों ने पहले

## रियल बॉक्स

## जब नायक प्रेमी से मनोविकारी बन गया

## हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।



भारतीय सिनेमा में प्रेम हमेशा सबसे लोकप्रिय विषय रहा है। प्रेम की कोमलता, त्याग, समर्पण और विरह की पीड़ा को फिल्मों ने जिस भावुकता से प्रस्तुत किया, उसने दर्शकों की पीढ़ियों को प्रभावित किया। एक समय था जब फिल्मों का नायक प्रेम के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देता था। वह प्रेमिका की खुशी के लिए खुद को मिटा देने में भी संकोच नहीं करता था। लेकिन समय बदला और सिनेमा का प्रेम भी बदल गया। अब परदे पर ऐसा प्रेमी दिखाई देने लगा, जो प्रेम में असफल होने पर हिंसक, आक्रामक और मनोविकारी बन जाता है। प्रेम उसके लिए भावना नहीं, बल्कि अधिकार बन गया। यही बदलाव आज के सिनेमा और समाज दोनों के लिए गंभीर प्रश्न खड़े करता है। हिंदी फिल्मों में लंबे समय तक प्रेम को पवित्र और त्यागमयी रूप में दिखाया गया। राज कपूर, दिलीप कुमार और देव आनंद के दौर का नायक प्रेम में हारकर भी मर्यादा नहीं छोड़ता था। वह दर्द सह लेता था, मगर प्रेमिका के जीवन में हिंसा नहीं लाता था। 'मुगल-ए-आजम', 'आवारा', 'गाइड' और 'अराधना' जैसी फिल्मों में प्रेम का दर्द था, पर उसमें प्रतिशोध का उन्माद नहीं था। उस दौर का नायक समाज की सीमाओं और रिस्ते की गरिमा समझता था। लेकिन, 1990 के दशक में फिल्मों के नायक का चरित्र तेजी से बदला।

उदारीकरण के बाद समाज में उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद बढ़ा। इसी दौर में फिल्मों में ऐसे प्रेमियों को जन्म दिया, जो प्रेम में असफल होकर मानसिक असंतुलन और हिंसा की राह पकड़ लेते हैं। इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण शाहरुख खान की फिल्में बनीं। बाजीगर, डर और 'अंजाम' में उन्होंने ऐसे पात्र निभाए, जो प्रेम को अधिकार समझते हैं। इन फिल्मों में नायक प्रेमिका को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहता है। 'डर' का रहलू आज भी हिंदी सिनेमा के सबसे खतरनाक प्रेमियों में गिना जाता है। वह एकरतफा प्रेम में इतना पागल हो जाता है कि प्रेमिका की निजी जिंदगी में दखल देता है, उसका पीछा करता है और उसके पति की हत्या तक की योजना बना डालता है। यह प्रेम नहीं, बल्कि जुनून और स्वामित्व की भावना थी। इसके बावजूद दर्शकों ने इस किरदार को लोकप्रिय बना दिया। यही वह मोड़ था, जहां सिनेमा ने प्रेम और हिंसा को एक साथ परोसना शुरू किया। इसी तरह 'अंजाम' में शाहरुख खान का पात्र अस्वीकृत को स्वीकार नहीं कर पाता और प्रतिशोध में पूरी जिंदगी तबाह कर देता है। यह चरित्र प्रेम के नाम पर हिंसक मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

दिलचस्प बात यह है कि इन फिल्मों में खलनायक और नायक की रेखाएं धुंधली हो गईं

थीं। दर्शक उस पात्र से डरते भी थे और प्रभावित भी होते थे। प्रेम में मानसिक असंतुलन का यह चित्रण केवल शाहरुख खान तक सीमित नहीं रहा। 'अग्निबांधी' में नाना पाटेकर ने ऐसे पति की भूमिका निभाई, जो पत्नी को अपनी निजी संपत्ति समझता है। उसकी असुरक्षा और पागलपन उसे हिंसक बना देते हैं। इसी विषय पर बनी 'दर' में अरबाज खान का चरित्र भी इसी मानसिकता का विस्तार था। इन फिल्मों ने यह दिखाया कि प्रेम में असफलता या असुरक्षा किस तरह व्यक्ति को विनाशकारी बना सकती है। भारतीय सिनेमा में मानसिक रोगों को अक्सर प्रेम की विफलता से जोड़कर दिखाया गया। 'खामोशी' जैसी फिल्मों में मानसिक पीड़ा को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश हुई थी। वहीदा रहमान का चरित्र प्रेम और कर्तव्य के बीच टूटा दिखाई देता है। लेकिन बाद के वर्षों में मानसिक रोग केवल नाटकीयता पैदा करने का माध्यम बनकर रह गए। 'तेरे नाम' में सलमान खान का चरित्र



प्रेम में असफल होकर मानसिक संतुलन खो बैठा है। फिल्म की लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि देशभर में युवाओं ने उसकी हेयरस्टाइल तक अपनाई। यह फिल्म प्रेम में हिंसक जुनून को रोमांटिक रूप में प्रस्तुत करती नजर आई। समस्या यह नहीं कि फिल्मों में मानसिक विकार दिखाए गए। समस्या यह है कि उन्हें अक्सर 'ग्लैमर' और रोमांच के साथ प्रस्तुत किया गया। सिनेमा ने कई बार यह संदेश दिया कि सच्चा प्रेम वही है, जिसमें दीवानगी हो, जुनून हो और प्रेमिका को किसी भी कीमत पर हासिल करने की चाह हो। यह सोच वास्तविक जीवन में खतरनाक साबित होती है। आज समाज में प्रेम-प्रसंगों से जुड़ी हिंसक घटनाएं लगातार बढ़ रही

हैं। असफल प्रेमी द्वारा हत्या, एसिड अटैक, पीछा करना और आत्मघाती कदम उठाने जैसी घटनाएं चिंता का विषय बन चुकी हैं। दरअसल, फिल्मों का प्रभाव समाज पर गहरा पड़ता है। खासकर युवा दर्शक फिल्मों के नायकों को आदर्श मानते हैं। जब परदे पर दिखाया जाता है कि प्रेमिका के इंकार के बाद भी लगातार पीछा करना सच्चे प्यार की निशानी है, तब यह मानसिकता समाज में भी प्रवेश करती है। कई फिल्मों में नायिका अंततः उसी लड़के को स्वीकार कर लेती है, जो उसका लगातार पीछा करता रहा हो। इससे युवाओं के मन में गलत संदेश जाता है कि जितना आक्रामकता प्रेम प्राप्त करने का साधन हो सकता है। हालांकि, भारतीय सिनेमा का दूसरा पक्ष भी है। कुछ फिल्मकारों ने मानसिक रोगों और असफल प्रेम को संवेदनशील दृष्टि से समझने की कोशिश की। 'रॉकस्टार', 'तमाशा' और 'कबीर सिंह' जैसी फिल्मों पर भी बहस हुई कि वे प्रेम और मानसिक असंतुलन को किस तरह प्रस्तुत करती हैं। 'कबीर सिंह' को लेकर विशेष विवाद हुआ, क्योंकि उसका नायक गुस्सेल, आत्मविनाशी और हिंसक व्यवहार वाला व्यक्ति है, फिर भी उसे रोमांटिक नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस फिल्म ने युवाओं के बीच लोकप्रियता भी हासिल की और आलोचना भी झेली।

आज का दौर सोशल मीडिया और त्वरित प्रसिद्धि का है। रिस्ते में धैर्य कम हुआ है और अस्वीकार को सहन करने की क्षमता भी घटती दिखाई देती है। फिल्मों में जब असफल प्रेमी को हीरो की तरह दिखाया जाता है, तब यह समाज में पहले से मौजूद असुरक्षा और आक्रामकता को और बढ़ा देता है। यही कारण है कि अब फिल्मों की सामाजिक जिम्मेदारी पर गंभीर बहस होने लगी है। यह कहना गलत होगा कि समाज केवल फिल्मों से प्रभावित होता है। सिनेमा समाज से ही कहानियां लेता है। लेकिन यह भी सच है कि फिल्मों में दिखाई गई चीजें लोगों के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इसलिए फिल्मकारों की जिम्मेदारी केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रह जाती। उन्हें यह भी समझना होगा कि प्रेम को हिंसा और स्वामित्व की भावना के रूप में प्रस्तुत करना समाज को गलत दिशा में ले जा सकता है।

भारतीय सिनेमा का नायक कभी त्याग और मर्यादा का प्रतीक माना जाता था। आज वही नायक कई फिल्मों में असफल प्रेम के बाद हिंसा, बदले और मानसिक विकार का चेहरा बन गया है। यह बदलाव केवल फिल्मों का नहीं, बल्कि समाज के बदलते मनोविज्ञान का संकेत भी है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने रिस्ते को भी प्रतिस्पर्धा और अधिकार की वस्तु बना दिया है। प्रेम अब धैर्य और समर्पण की जगह कई बार अहंकार और स्वामित्व का रूप लेने लगा है। जरूरत इस बात की है कि सिनेमा प्रेम को उसकी संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत करे। प्रेम और प्रतिस्पर्धा, सम्मान और स्वीकार्यता का नाम है, तो उसमें हिंसा और जुनून के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। वरना परदे का यह 'पागल प्रेमी' समाज के लिए खतरनाक प्रेरणा बनता होगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

## 'गवर्नर' में दिखेगा देश को बचाने का संघर्ष

भारतीय सिनेमा में बीते कुछ वर्षों से वास्तविक घटनाओं और देश के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दौर पर आधारित फिल्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। दर्शक भी ऐसी कहानियों को पसंद कर रहे हैं, जिनमें मनोरंजन के साथ इतिहास और समाज की सच्चाई जुड़ी हो। इसी क्रम में निर्माता विपुल अमृतलाल शाह अब एक और गंभीर और चर्चित विषय को बड़े पर्दे पर लेकर आ रहे हैं। उनकी नई फिल्म 'गवर्नर' : द साइलेंट सेविंगर का टीजर जारी होते ही चर्चा का विषय बन गया है।

मनोज बाजपेयी के जन्मदिन के अवसर पर पहले फिल्म का पोस्टर जारी किया गया था और अब इसकी पहली झलक ने दर्शकों को उत्सुकता और बढ़ा दी है। छोटी सी झलक में ही फिल्म का गंभीर वातावरण, तनावपूर्ण परिस्थितियां और मनोज बाजपेयी का



प्रभावशाली अभिनय लोगों का ध्यान खींच रहा है। दर्शकों को महसूस हो रहा है कि यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि देश के इतिहास के एक अहम मोड़ की कहानी सामने लाने वाली है।

फिल्म की कहानी 1990 के दशक के उस दौर पर आधारित है, जब भारत गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। देश का विदेशी मुद्रा भंडार बेहद कम हो चुका था और हालात इतने खराब बताए जाते हैं कि कुछ दिनों तक ही आयात चल पाने की स्थिति बची थी। उस समय देश को आर्थिक रूप से संभालने के लिए कई बड़े और कठोर फैसले लेने पड़े थे। टीजर में इसी तनावपूर्ण माहौल की झलक दिखाई गई है। बंद कमरों में चल रही बैठकों, सरकार और आर्थिक तंत्र की बेचैनी तथा देश को संकट से बाहर निकालने की कोशिशों को प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया है। फिल्म इस बात को सामने लाने की कोशिश करती नजर आती है कि कैसे कुछ लोग बिना किसी चर्चा या सुर्खियों में आए देश को टूटने से बचाने में लगे हुए थे।

नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई फिल्म 'कर्तव्य' चर्चा में जरूर है, लेकिन दर्शकों को कुछ नया और रोमांचक देने में यह काफी हद तक कमजोर साबित होती है। अपराध, राजनीति और ऑनर किलिंग जैसे पुराने विषयों पर आधारित यह कहानी शुरुआत से ही अनुमानित लगती है। फिल्म देखते समय लगातार किसी बड़े मोड़ की उम्मीद बनी रहती है, लेकिन अंत तक कहानी कोई खास चौंकाने वाला असर नहीं छोड़ती। फिल्म में सैफ अली खान एक ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका में दिखाई देते हैं और उनका अभिनय पूरी फिल्म की सबसे मजबूत कड़ी बनकर सामने आता है। संवाद बोलने का अंदाज, गंभीर व्यक्तित्व और पद पर उनकी



मौजूदगी कई दृश्यों को प्रभावशाली बनाती है। हालांकि दमदार अभिनय के बावजूद वे कमजोर पटकथा को पूरी तरह संभाल नहीं पाते। अभिनेता सौरभ द्विवेदी खलनायक की भूमिका में नजर आते हैं, लेकिन उनका किरदार ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ता। कई दृश्यों में उनका असर कमजोर महसूस होता है और दर्शकों को उनसे कहीं ज्यादा ताकतवर रसिक की उम्मीद थी। संजय मिश्रा और रसिक दुग्गल ने अपने-अपने किरदारों में अच्छे काम किया है, लेकिन उन्हें अभिनय दिखाने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला। 'भक्षक' जैसी चर्चित फिल्म बनकर आने के बाद ही साहूदेव ने दर्शकों को काफी उम्मीदें दीं, लेकिन इस बार उनका निर्देशन खास प्रभाव नहीं छोड़ता। फिल्म की पटकथा और प्रस्तुतीकरण पुराने ढंग पर चलते नजर आते हैं, जिसकी वजह से यह अपराध-रोमांचक फिल्म साधारण बनकर रह जाती है।

## हर दौर में बदलते रहते हैं सितारों के दौर



अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के चमकते सितारों की कहानियां हमेशा बदलती रही हैं। फिल्मों के सितारों के साथ कई बार ऐसा हुआ है कि कल तक जिन सितारों के सितारे जगमगा रहे थे, अचानक वह धूमकेतु की पूंछ की तरह गर्द में समा गए। कई सितारों के पास आजीविका की कोई



तंगी नहीं रही, लेकिन उनकी असफलता उन्हें नशाखोरी में डुबो गई और रजतपट से उनकी विदाई हो गई। सफलता से असफलता का यह सिलसिला केवल अभिनेताओं के साथ ही चला। कुछ ऐसी अभिनेत्रियां भी हुई जिन्होंने सफलता का स्वाद तो खूब चखा, लेकिन जब असफलता की बेल उनके करियर पर फूली तो वह असफलता के समंदर में डूब गई।

वे जमाने के कलाकारों की बात की जाए तो हिन्दी सिनेमा में मोतीलाल ऐसे सितारे हुए जिनके बारे में यह कहा जाता था कि यदि किसी के शरीर पर स्टूट फबते हैं तो वह है मोतीलाल। मेथड एक्टिंग के सरताज मोतीलाल का एक जमाना था। निर्माता उनके घर पर कतारें लगाए खड़े रहते थे। कहा जाता है कि उस जमाने की खूबसूरत स्टार शोभना समर्थ के साथ उनके खास संबंध थे। अनाड़ी, असली नकली, मस्ताना, देवदास जैसी फिल्मों में देने वाले इस स्टार का एक समय ऐसा भी आया जब आर्थिक तंगी ने उन्हें शराबखोर बना दिया और छोटी छोटी बातों के बाद तो उनका सितारा ही अस्त हो गया।

भगवान दादा जो कभी मुंबई की चाल से आकर बॉलीवुड के इतने बड़े सितारे बन गए थे कि उनके पास चालीस कमरों वाला बंगला और सप्ताह के सात दिनों के लिए सात अलग अलग विदेशी कारों का खजौरा था। फिल्मों व्यापार में अनाड़ी और दौलत लुटाने में दिलदार इस अभिनेता के बारे में यह कहा जाता था कि सफलता के दौर में अपने अभिन्न मित्र सी रामचंद्र के साथ मिलकर वह रात को बोरों में नोट भरकर गरीब बस्तियों में जाते थे और नोट लुटकर लौट आते थे। लेकिन, समय का चक्र कुछ ऐसा चला कि एक के बाद एक पर्याप्त फिल्मों का निर्माण कर भगवान दादा कर्ज के दलदल में ऐसे फंसे कि बंगला और कारों सब बिक गईं और वह फिर से चाल में लौट आए।

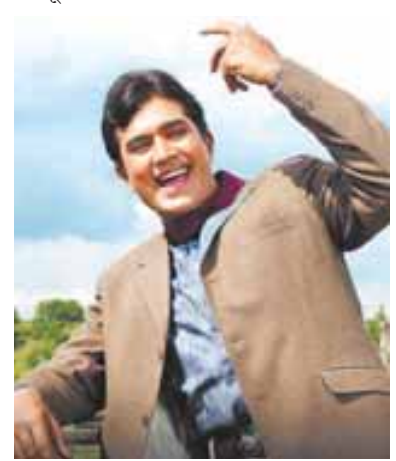
ऐसे ही एक सुपरस्टार हुए थे भारत भूषण। वे एक सफल सितारे थे। मुंबई में उनका आलीशान बंगला था जिसकी लाइब्रेरी में एक लाख से अधिक महंगी और दुर्लभ पुस्तकें थीं। यह पुस्तकालय साहित्यकारों के लिए खुला रहता था। कहा जाता है कि साहित्य लुधियानवी ज्यादातर समय वहीं बिताते थे। पौराणिक और सांस्कृतिक फिल्मों के स्टार भारत भूषण को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। 'बरसात की रात' जैसी सुपर हिट बनाने के बाद फिल्म निर्माण का चक्रा उन्हें



ले डूबा। उनके भाई की फिल्मों 'नई उमर की नई फसल' और 'ग्यारह हजार लड़कियाँ' की असफलता से वह घर से बेघर हो गए। कुछ पैसा जो उन्होंने अपने भाई के नाम से जमा किया था वह भी उनका भाई डकार गया। उन्हें अपना बंगला राजेन्द्र कुमार को बेचना पड़ा, जो बाद में राजेश खन्ना के 'आशीर्वाद' बंगले के रूप में मशहूर हुआ और उनकी मौत के बाद लगभग 200 करोड़ रूप में बिका। इसी बंगले के मालिक रहे भारत भूषण को अपने आखिर दिन छोटे से फ्लैट में बिताने पड़े थे।

ऐसी बात नहीं है कि सफल सितारे एकदम ही डूब गए। कई सितारों के पास आजीविका की कोई तंगी नहीं रही, लेकिन उनकी असफलता उन्हें नशाखोरी में डुबो गई और रजतपट से उनकी विदाई हो गई। इस फेहरिस्त में राजेश खन्ना का नाम सबसे ऊपर आता है। राजेश खन्ना ने सफलता का जो दौर देखा वह किसी दूसरे सितारे को नसीब नहीं हुआ। पैसों की उनके पास कोई तंगी नहीं थी। लेकिन चमचों से घिरे काका जब अर्श से फर्श पर आए तो सारे सौंपी साथी उनका साथ छोड़ गए। एक के बाद एक उनकी फिल्मों में पीटती गईं। उनके पास नाम तो था। संसद की सदस्यता भी थी लेकिन बॉलीवुड से उनका दौर समाप्त हो चुका था। जब

विवेक ओबेरॉय फिल्मों आए तो लग रहा था कि वह धूम मचा देंगे। ऐसा हुआ भी, लेकिन ऐश्वर्या राय को लेकर उन्होंने जबसे सलमान से पंगा लिया उनका करियर चौपट हो गया। बाद में उन्होंने विदेशों में कस्टमरेशन वर्क्स से उतना कमाया जितना बॉलीवुड से भी नहीं कमाया। वह आज भी आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हैं लेकिन उनका स्टारडम चौपट हो गया।



'लव स्टोरी' के प्रदर्शन से ही कुमार गौरव स्टार बन गए थे। उम्मीद लगाई जा रही थी कि जुबली कुमार के बेटे अपने पिता की राह पर चलते हुए बॉलीवुड में छत्रा जाएंगे। लेकिन, गलत फिल्मों के चुनाव ने उन्हें पटरी से उतार दिया। 'नाम' के अलावा उनकी कोई हिट फिल्म नहीं हुई। उनके लिए राजेन्द्र कुमार ने कुछ फिल्मों का निर्माण भी किया, पर वे कुमार गौरव का गौरव वापस नहीं लौटा पाया। आज भले ही वह विदेश में हाईप्रोफाइल बिजनेस से लाखों डॉलर कमा रहे हैं, लेकिन बॉलीवुड में उनकी दाल नहीं गल पायी।

महदूर हिन्दी फिल्मों के एकमात्र हास्य कलाकार थे जो किसी जमाने में नायक से भी ज्यादा पारिश्रमिक पाते थे। निमाता और निर्देशक के रूप में भी वे सफल थे। बॉलीवुड में उनकी इतनी चलती थी कि उनके एक फोन पर नामी निर्माता किसी को भी काम दे देते थे। उनकी सिफारिश पर ही मुमताज को राम और श्याम, फरीद जलाल और अरुणा इंगनी को 'बॉबी' में पेट्री मिली थी। एक समय ऐसा भी आया जब वह काम के लिए भटकते रहे, लेकिन उन्हें किसी ने काम नहीं दिया। उन्होंने कहा था कि उन्हें पैसों के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए काम चाहिए। क्योंकि, वह कैमरे से दूर नहीं रह सकते थे। ऐसे वक्त में उन्हें सबसे पहले चांस देने वाले

